रजिस्ट्री सं. डी एल—33001/96

REGISTERED No. DL—33001/96

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 13] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 30, 1996 (चैत्र 10, 1918)

No. 13] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 30, 1996 (CHAITRA 10, 1918)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	319
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	257
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	3
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	413
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	291
भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	239
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं।	3035
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	59
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला अनुपूरक	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

1—521 GI/95

CONTENTS

	PAGE
PART I— SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	319
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	257
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . .	3
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	413
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)— Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories). .	*
PART II—SECTION 3—SUB SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) .	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence .	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India .	29
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	239
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	3035
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies .	59
PART IV—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc., both in English and Hindi	*

*Follow not received.

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली-110 001, दिनांक 26 मार्च 1996

सं. 24-प्रेज/96—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. मास्टर सुधीर सरदाना,
34/8, कृष्ण कालोनी,
भिवानी,
हरियाणा ।

7-7-1994 को लगभग रात 9.30 बजे दो डाकू डाक्टरी सहायता प्राप्त करने के बहाने कृष्ण कालोनी, भिवानी में डा. ओम प्रकाश सरदाना के घर में आ घुसे । डा. सरदाना, जिनका क्लीनिक जैन चौक पर था, अपने परिवार के सदस्यों के साथ खाना खा रहे थे । मास्टर सुधीर ने घर में घुस आने वालों को कहा कि वे उसके पिता के खाना खा लेने तक इन्तजार करें । वे दोनों अहाते में पड़ी खाट पर बैठ कर इन्तजार करने लगे । इस बीच, उनमें से एक ने गैलरी के दरवाजे पर ताला लगा दिया । इससे मास्टर सुधीर को उनकी नीयत पर शक हो गया और उसने उनसे पूछा कि उन्होंने ताला क्यों लगा दिया है । तभी, डा. सरदाना अपना खाना छोड़कर अहाते में आ गए लेकिन डाकुओं ने उन्हें धक्का मारकर गिरा दिया । एक डाकू ने, जिसकी पहचान बाद में रोहताश के रूप में की गई, अपनी पिस्तौल निकालकर डाक्टर पर गोली चला दी जो उनके सीने पर जा लगी । जख्मी डा. सरदाना, उनकी पत्नी, पुत्र तथा पुत्री सभी डाकू पर झपट पड़े । छोटी उम्र का होते हुए भी मास्टर सुधीर सरदाना ने डाकू को नहीं छोड़ा और सहायता के लिए पुकार की । इस बीच, दूसरा डाकू दरवाजा खोलकर भाग निकला और अन्य डाकू भी, जो घर के बाहर इन्तजार कर रहे थे, घबराकर उसी के पीछे भाग निकले । श्री रोहताश ने अपने आपको मास्टर सुधीर से छुड़ाने की कोशिश की और उसे जान से मार देने की भी धमकी दी ।

लेकिन, मास्टर सुधीर डरा नहीं और उसने उसे तब तक मजबूती से पकड़े रखा जब तक कि सहायता की पुकार सुनकर पड़ोसी वहां आ नहीं गए । पकड़े गए उस डाकू को बाद में पुलिस के हवाले कर दिया गया । गोली लगने के कारण बाद में डा. सरदाना की मौत हो गयी ।

2. छोटी उम्र का होने के बावजूद, मास्टर सुधीर सरदाना ने डाकू को गिरफ्तार करवाने में अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया है ।

2. मास्टर प्रहलाद सिंह,
पुत्र श्री जगत सिंह,
गांव तथा डाकघर मुण्डुखा,
तहसील चम्पावत,
जिला पिथौरागढ़,
उत्तर प्रदेश ।

7-11-1994 को जूनियर हाई स्कूल का छात्र, मास्टर प्रहलाद सिंह अपने पांच साथियों के साथ स्कूल जा रहा था जो उसके घर से लगभग 2 किलो मीटर दूर पहाड़ी क्षेत्र में स्थित था । उस दिन जब वे स्कूल जा रहे थे तो एक जंगली भालू ने उन पर हमला कर दिया । अचानक हुए इस हमले से स्तब्ध होकर बच्चे सहायता के लिए चीख-पुकार करते भागने लगे । परिस्थितियों से विवश होते हुए भी, अपनी कम उम्र के बावजूद श्री प्रहलाद सिंह डरे नहीं और भालू पर टूट पड़े तथा इस प्रकार अन्य सभी को बच निकलने का मौका दिया । क्रुद्ध भालू जोर से मास्टर सिंह पर झपट पड़ा और उसके दायें बाजू को फाड़ डाला, उसके सिर में तथा दाहिनी आंख में अपने तेज नाखून गाड़ दिए और उसके चेहरे पर गंभीर घाव कर दिए ।

2. मास्टर प्रहलाद सिंह ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए, 5 बच्चों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

गिरीश प्रधान, निदेशक

सं. 25-प्रेज/96.—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

1. मास्टर तेंजिंग मरक,
मार्फत श्री नावन मरक,
गांव रोंगसांग अजीरिगिरि,
पश्चिमी गारो पहाड़िया जिला,
मेघालय ।

2.2.1995 को लगभग शाम 3.00 बजे श्री नावन मरक अपने भतीजे तेंजिंग मरक के साथ गांव के जंगल से बास लाने के लिए जा रहे थे कि अचानक एक चीते ने श्री मरक पर हमला कर दिया । इस संघर्ष में श्री मरक चीते को जमीन पर पटक देने में सफल हो गए । इस मौके का फायदा उठाते हुए और अपना धैर्य खोए बिना, मास्टर तेंजिंग ने फौरन अपना कुल्हाड़ा चीते के सिर पर दे मारा जिससे चीते की तत्काल मौत हो गई। हालांकि, श्री नावन मरक को इस भिड़ंत में गंभीर चोटें आई थीं, लेकिन मास्टर तेंजिंग द्वारा किए गए समय पर साहसपूर्ण कार्य से श्री नावन की जान बचाई जा सकी ।

2. मास्टर तेंजिंग मरक ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए अपने चाचा की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

गिरीश प्रधान, निदेशक

सं. 26-प्रेज/96.—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

1. श्रीमती येल्ला बेबी सरोजिनी,
पत्नी श्री सत्य नारायण,
गौनथेरू ड्रेन का फेरी प्वाइंट,
येम्मा ग्राम,
भीमावरम मंडल,
पश्चिम गोदावरी जिला,
आन्ध्र प्रदेश ।

28.7.95 को प्रातः लगभग 8.30 बजे ग्राम येम्मा की निवासी, श्रीमती येल्ला बेबी सरोजिनी ने अपने घर के पास फेरी प्वाइन्ट गौनथेरू ड्रेन से आ रही सहायता के लिए महिलाओं की चीख पुकार सुनी । वह तुरन्त उस तरफ दौड़ी तथा 8 महिलाओं को अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करते देखा क्योंकि उनकी नाव उलट गई थी । यह देखकर वह ड्रेन में कूद गई और उन महिलाओं के प्राण बचाने में सफल हुई ।

2. श्रीमती येल्ला बेबी सरोजिनी ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना डूबने से 8 महिलाओं की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

2. फादर सेबिओ मेनेजिस डि गामा (मरणोपरांत)
एट वर्न, सैलमेंट, गोआ ।

29-10-1995 को सिरोलिम के निवासी मास्टर लिओनेल गैमेंडेस, मास्टर वेन रौड्रिग्स और मास्टर फ्लायड नामक तीन बच्चे सिरोलिम चैपेल के प्रार्थना घर में सामूहिक प्रार्थना के पश्चात साल नदी की निकटवर्ती झील में स्नान करने गए । अचानक नदी के ज्वार बहाव के कारण वे गहरे पानी में बह निकले और डूबने लगे । यह देखकर अन्य बच्चों ने सहायता के लिए शोर मचाया । उनकी चीख-पुकार सुनकर फादर सेबिओ मेनेजिस डिगामा, जो पास में ही थे, पानी में कूद पड़े और बच्चों को बचाने के लिए वीरतापूर्ण प्रयास करने लगे । परन्तु दुर्भाग्यवश बच्चों को बचाने से पूर्व वह स्वयं डूब गए ।

2. फादर सेबिओ मेनेजिस डि गामा ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना तीन बच्चों की जान बचाने के प्रयास में, अपनी स्वयं की जान की परवाह न करते हुए अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और ऐसा करते हुए उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया ।

3. श्री शेर सिंह,
सुपुत्र श्री राजाराम,
ग्राम भूड़ माजरा,
तहसील छछरौली,
जिला यमुना नगर,
हरियाणा ।

4-6-1994 को प्रातः 6 बजे ग्राम भूड़ माजरा के श्री बलदेव सिंह की लकड़ी और सरकंडों से बनी झोंपड़ी में अचानक आग लग गई । परिवार के सदस्य झोंपड़ी से बाहर भागे, परन्तु घबराहट में गलती से झोंपड़ी को बाहर से बंद कर दिया । बाद में, उन्हें याद आया कि उनका 5-6 वर्ष का बच्चा झोंपड़ी में ही रह गया है और झोंपड़ी में तो आग लगी हुई थी । उस अभागे बच्चे को बचाने के लिए जलती हुई झोंपड़ी में घुसने का साहस कोई भी नहीं जुटा पाया । यह देखकर उसी गांव के श्री शेर सिंह ने अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए झोंपड़ी की गारे की दीवार में सुराख किया और स्वयं को गीले कपड़े में लपेट कर वह झोंपड़ी में घुस गया तथा बेहोश बच्चे को उठाकर सुराख से बाहर धकेल दिया । बाद में, गांव वालों की मदद से सुराख को चौड़ा कर श्री शेर सिंह झोंपड़ी से बाहर निकल आने में सफल हुए ।

2. श्री शेर सिंह ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए आग में फंसे बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

4. श्री गोपाल सिंह,
सुपुत्र श्री स्वाला नन्द,
निवासी अंधा, डाकघर कोट
तहसील चारगांव,
जिला शिमला,
हिमाचल प्रदेश ।

12-8-1994 को शाम को मास्टर संजीव कुमार, पुत्र श्री रौशन लाल अचानक आन्ध्रा नदी में गिर पड़ा और डूबने लगा। घटना स्थल पर नदी की चौड़ाई 20 फुट थी और पानी की गहराई 10 फुट थी। घटना के समय पानी 40 कि. मी./घंटा की रफ्तार से बह रहा था। यह देखकर राजकीय हाई स्कूल, आंध्रा का 8वीं कक्षा का विद्यार्थी, श्री गोपाल सिंह नदी में कूद पड़ा और संजीव कुमार की जान बचाने में सफल रहा।

2. इस प्रकार श्री गोपाल सिंह ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए एक लड़के की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

5. श्री सुभाष चन्द्र तेग्ता,
सुपुत्र श्री हरदयाल तेग्ता,
निवासी करसा (मैह और ली),
तहसील रोहरू, जिला शिमला,
हिमाचल प्रदेश।

13-9-1994 को शाम 5.00 बजे अपने स्कूल से घर लौट रही कुमारी रीना, एक हैंगिंग पुल से नदी पार करते हुए अचानक पत्थर नदी में गिर पड़ी। उस समय नदी में बाढ़ आई हुई थी। वहां मौजूद अन्य लड़कियों और व्यक्तियों ने सहायता के लिए चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया। स्कूल से लौट रहे 10+1 के विद्यार्थी, श्री सुभाष तेग्ता ने यह विकट स्थिति देखी और समय गंवाए बिना तत्काल नदी में कूद गए। इस दौरान, नदी के पानी के तेज बहाव के कारण वह लड़की लगभग 400 मीटर दूर बह गई थी। श्री तेग्ता को संघर्ष तो करना पड़ा परन्तु वह उस लड़की की जान बचाने में सफल हुए और उसे सुरक्षित बाहर निकाल लाए।

2. श्री सुभाष चन्द्र तेग्ता ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना डूबती हुई लड़की की जान बचाने में अदम्य साहस और मुस्तैदी का परिचय दिया।

6. श्री चेतन कुमार भंडारी, (मरणोपरांत)
सुपुत्र श्री जगदीश भंडारी,
अक्षत, पुरानी मारगुडी रोड,
सूरतकल, इडिया ग्राम,
मंगलौर तालुका,
दक्षिण कन्नड़ जिला,
कर्नाटक।

9-7-1994 को प्रातः 7.30 बजे श्री चेतन कुमार भंडारी अपने मित्र श्री सुनील के साथ मंगलौर तालुका के सूरतकल के पास "कल्पने" जलाशय में तैरने गए। 70 मीटर रेडिअस वाले इस जलाशय में पानी 60-70 फुट गहरा था। तैरते हुए श्री सुनील नियंत्रण खो बैठे और डूबने लगे। यह देखकर, श्री चेतन कुमार भंडारी अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना जलाशय में कूद गए और श्री सुनील की जान बचाने में सफल हो गए। तथापि, ऐसा करते हुए, दुर्भाग्यवश श्री भंडारी स्वयं गहरे पानी में फंस गए और डूब गए।

2. श्री चेतन कुमार भंडारी ने, अपनी जान को जोखिम में डालकर अपने मित्र की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

7. श्री ग्रेशियस संरोकी होर्ता,
डाक कोसारकोड तालुका,
होन्नावर जिला,
उत्तर कन्नड़,
कर्नाटक।

14-10-1993 को प्रातः 11.00 बजे अपसराकोंडा ग्राम, होन्नावर तालुका, उ. क. जिला निवासी श्रीमती देवी कन्या गौण्डा (37 वर्ष), कुमारी गीता गनपय्या गौड़ा (11 वर्ष) और कुमारी गनपी हनुमन्त गौड़ा (10 वर्ष) नीले पत्थरों के टुकड़े इकट्ठे करने अरब सागर के तट पर गईं। तेज लहरों के कारण समुद्र का पानी उन्हें बहा ले गया और वे समुद्र के किनारे से 80-100 मीटर दूरी पर 12-15 फुट गहरे पानी में डूबने लगीं। उनकी दशा देखकर श्री ग्रेशियस संरोकी होर्ता और उनके साथी श्री थामस टाम होर्ता उनकी सहायता के लिए दौड़े आए और उनकी जान बचा ली।

2 श्री ग्रेशियस संरोकी होर्ता ने श्री थामस टाम होर्ता के साथ अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना समुद्र में डूबने से तीन व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

8. श्री थामस टाम होर्ता,
डाक-कसारकोड तालुक,
होन्नावर जिला,
उत्तर कन्नड़,
कर्नाटक।

14-10-1993 को प्रात. 11.00 बजे अपसराकोंडा ग्राम, होन्नावर तालुका, उ. क. जिला निवासी श्रीमती देवी कन्या गौण्डा (37 वर्ष), कुमारी गीता गनपय्या गौड़ा (11 वर्ष) और कुमारी गनपी हनुमन्त गौड़ा (10 वर्ष) नीले पत्थरों के टुकड़े इकट्ठे करने अरब सागर के तट पर गईं। तेज लहरों के कारण समुद्र का पानी उन्हें बहा ले गया और वे समुद्र के किनारे से 80-100 मीटर दूरी पर 12-15 फुट गहरे पानी में डूबने लगीं। उनकी दशा देखकर श्री थामस टाम होर्ता और उनके साथी श्री ग्रेशियस संरोकी होर्ता उनकी सहायता के लिए दौड़े आए और उनकी जान बचा ली।

2. श्री थामस टाम होर्ता ने श्री ग्रेशियस संरोकी होर्ता के साथ, अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना समुद्र में डूबने से तीन व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

9. कुमार रामन्ना उड़चप्पा होसूर,
कदमपुर, मुन्डारगी तालुक,
धारवाड़ जिला,
कर्नाटक ।

17-2-1994 को लगभग दोपहर 2 बजे गवर्नमेंट हायर प्राईमरी स्कूल, कदमपुर, मुन्डारगी तालुक का एक विद्यार्थी, कुमार बासवराज (12 वर्ष) पानी पीने के लिए पास के कुंए पर गया । खुले कुंए से पानी पीने के बाद अपना टिफिन धोते समय कुमार बासवराज अचानक फिसल गया और कुंए में जा गिरा । घटना के समय कुंए में पानी 15 फुट गहरा था । यह देखकर उसी के स्कूल का 8 वीं कक्षा का छात्र, कुमार रामन्ना उड़चप्पा होसूर अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना कुंए में कूद पड़ा और उस असहाय लड़के को बचा लिया ।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद, कुमार रामन्ना उड़चप्पा होसूर ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह किए बिना कुंए में डूबने से एक बालक की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

10. श्री ए. जार्ज,
पुत्र श्री एलेक्जेन्डर,
पुल्लिविलाकम वीडू,
नाडाथारा, डाकघर-पूथुरा,
तिरुवनन्तपुरम, केरल ।

8-11-1994 को एक मछली पकड़ने वाली नौका "देवमाथ" जिसमें 5 व्यक्ति सवार थे, चेट्टुवा, चेमचुवाड अलीमुघम में समुद्र में मौसम खराब होने के कारण किनारे से 200 मी. की दूरी पर उलट गई । उस जगह पानी 15 मी. गहरा था और समुद्र बहुत अशांत था । दो व्यक्तियों की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी और शेष व्यक्तियों ने, जो डूब रहे थे, सहायता के लिए चीख-पुकार की । यह देखकर मछली पकड़ने वाली एक अन्य नौका "मजीरा" के एक कर्मचारी श्री ए. जार्ज ने समुद्र में छलांग लगा दी और अपने साथियों द्वारा फेंकी गई एक रस्सी की सहायता से दो व्यक्तियों को अपनी नौका की तरफ खींच लिया और उन्हें सुरक्षित बचा लिया ।

2. श्री ए. जार्ज ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना समुद्र में डूबने से दो व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

11. श्री इस्माइल,
पुत्र श्री कासिम,
इंचाक्कट्टू हाउस, ईलमदेशम डाकघर,
कोलिनाट्टम गांव, तोडुपुझा तालुक,
केरल ।

29-7-94 को ईलमदेशम कब्रिस्तान के ऊपर से होकर गुजरने वाली तीन इलैक्ट्रिक लाइन टूट गई और तोडुपुझा कोलिचल रोड के जंक्शन पर गिर गई । मास्टर सुनील (15 वर्ष) ने यह सोचकर तार हटाने की कोशिश की कि उसमें करंट नहीं होगा । जैसे ही उसने तार को छुआ उसको बिजली का झटका लगा और वह तारों में उलझ गया । इस स्थिति में श्री इस्माइल जो उस बस में सवार थे जिसके यात्रियों ने उस लड़के को जीवन के लिए संघर्ष करते देखा था और बस वहीं रुक गई थी, सहायता के लिए दौड़े आए । उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना अपनी धोती निकाल कर उसके हाथों में लपेट दी और उसे बिजली के तार से बाहर खींच लिया । इस प्रकार, उन्होंने करण्ट लग जाने से लड़के की जान बचा ली ।

2. श्री इस्माइल ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह किए बिना मास्टर सुनील की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

12. कुमारी एस. शान्ता कुमारी,
पुलीचयल पडक्कुमकरा, वीडू, अम्बूरी,
अम्बूरी गांव, नयालिनकरा तालुक,
केरल ।

12-7-94 को सेंट थामस हाई स्कूल अम्बूरी की कुमारी शान्ताकुमारी कानी जनजाति की अन्य सात छात्राओं के साथ एक पुरानी देसी नाव में नायर बांध पार कर रही थी । बीच रास्ते में नौका उलट गई और नाव में बैठे व्यक्ति डूबने लगे । पास के जंगल की लोग बांध के किनारे पर इकट्ठे हो गए लेकिन कोई भी डूबते बच्चे को बचाने के लिए आगे नहीं आया । यह देखकर कुमारी शान्ताकुमारी हरकत में आई और उसने मगरमच्छों के कारण अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना एक और व्यक्ति की सहायता से तीन बच्चों की जान बचा ली ।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद, कुमारी एस. शान्ताकुमारी ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह किए बिना डूबते हुए तीन बच्चों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

13. कुमारी सुनीता,
पुत्री राधाकृष्ण पिल्ले,
निलिकाविल हाउस, संगाम कोन्नी डाकखाना,
कोझेनचेरी तालुक,
केरल ।

18-8-94 को सुबह 9.30 बजे कोन्नी निवासी श्रीमती मणियम्मा अजेनकोइल नदी में कपड़े धोते समय अचानक पानी में फिसल गयी और भंवर में फंस गई । नदी किनारे खड़ी दूसरी महिलाओं ने शोर मचाकर नदी के दूसरी तरफ के मजदूरों को सहायता के लिए बुलाया । यह देखकर कुमारी सुनीता, जो नदी के किनारे नहा रही थी, पानी में कूद पड़ी और उसने श्रीमती मणियम्मा को बचा लिया ।

2. कुमारी सुनीता ने अपनी जान की गंभीर जोखिम की परवाह किए बिना एक डूबती हुई महिला की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

14. कुमारी टीना जोसेफ,
कय्यलकल किआकुपुरम,
मलयालापुझा पथनमथिट्टा जिला,
केरल।

6-9-1994 को एन. एस. एस. यू. पी. स्कूल मलयालापुझा के पांचवीं कक्षा का छात्र मास्टर मीनु मोहन स्कूल के पास वाले कुएं से पानी खींचते समय अचानक कुएं में गिर पड़ा। कुएं के पास खड़े उसके मित्रों ने चीख-पुकार की। परन्तु कोई भी असहाय बालक को बचाने की हिम्मत नहीं जुटा सका। उनकी चीख-पुकार सुनकर उसी स्कूल की पांचवीं कक्षा की छात्रा, कुमारी टीना जोसेफ बालक को बचाने के लिए आगे आयी। लेकिन, बालक को बचाने के प्रयास में वह फिसल गई और कुएं में गिर पड़ी, लेकिन उसने अपनी सूझ-बूझ नहीं गंवाई और दूसरे छात्रों की मदद से बच्चे को कुएं से सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद, कुमारी टीना ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह किए बिना कुएं में डूबते हुए बालक की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

15. श्री रामदीन चरवा,
गांव कुपा विकास, खाड अंड़ागी,
जिला सरगुजा, मध्य प्रदेश।

8-4-94 को नाव चालक समेत 7 व्यक्ति एक देसी नाव में कुपा घाट से रेन नदी को पार कर रहे थे। अचानक नाव भंवर में फंस गई और उलट गई। श्री रामदीन चरवा नदी के दूसरे किनारे पर खड़े थे जो घटना स्थल से लगभग 100 मीटर की दूरी पर था। यह देखकर वह नदी में कूद पड़े और एक-एक करके सभी 7 व्यक्तियों को बचाने में सफल हुए।

2. श्री रामदीन चरवा ने अपनी जान की जोखिम की परवाह किए बिना, नदी में डूबने से सात व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

16. श्री राजेन्द्र उकण्डराव गोहड़ (मरणोपरान्त)
रामजीबाबा नगर,
मोरशी, जिला अमरावती,
महाराष्ट्र।

14/15 अप्रैल, 1994 की रात को लगभग 2.30 बजे गोली-बारूद तथा अन्य घातक हथियारों से लैस कुछ कुख्यात डाकू मोरशी बस्ती के रामजीबाबा नगर में स्थित श्री देवीदास मामकर के घर में घुस आए। डाकुओं ने अंधाधुंध गोली चलायी जिसके परिणाम स्वरूप श्री मामकर तथा उनकी पत्नी की मौत हो गयी और अन्य घरवालों को गंभीर चोटें आईं। डाकुओं ने 71,000/- रुपए की सम्पत्ति लूट ली जिसमें सोने के जेवरात तथा नकदी भी शामिल है। श्री उकण्डराव गोहड़ जो उनके पड़ोसी थे और अपने घर के बाहर सो रहे थे, शोर को सुनकर जाग उठे और उन डाकुओं का पीछा किया जो लूट का माल लेकर घर से बाहर आ रहे थे। उन्होंने अपनी लाठी से प्रहार करके एक डाकू को पकड़ने का प्रयास किया। डाकुओं ने श्री गोहड़ को उन्हें पकड़ने से रोकने के लिए गोली चला दी। श्री गोहड़ को गोली की चोट लगी जो घातक सिद्ध हुई और उनकी तत्काल घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

2. श्री राजेन्द्र उकण्डराव गोहड़ ने डाकुओं को पकड़ने के प्रयास में अदम्य साहस का परिचय दिया। तथापि, ऐसा करते हुए, उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

17. कुमारी मनभलंग सुचेन,
गांव बिशप फाल्स रोड,
लाअर माप्रेम, शिलांग,
मेघालय।

28-8-1995 को कुमारी मनभलंग सुचेन अपनी सात सहयोगियों के साथ उमशिरपी नदी, जिसके जलग्रहण क्षेत्र में भारी वर्षा के कारण बाढ़ आई हुई थी, के ऊबड़ खाबड़ तथा चट्टानी तट पर कपड़े धो रही थी। अचानक फिर तेजी से बाढ़ आ गई और संकरी नदी में जल का स्तर बढ़कर सामान्य से 10 फुट ऊंचा हो गया। कपड़े धो रहे लोग तेज धारा में बह गए। तथापि, सौभाग्यवश कुमारी सुचेन नदी के तट की ओर धकेल दी गई। पानी से बाहर आने पर उसने देखा कि कपड़े धो रहे लोगों के ग्रुप में से 3 लोग जिनमें उसका भाई भी शामिल था, तेज धारा के प्रवाह में बह चले थे। उसने फौरन नदी में छलांग लगा दी और एक गर्भवती महिला, श्रीमती जतेला सूपाडा को खींचकर सुरक्षित बाहर ले आयी। लेकिन, वह अपने भाई व एक अन्य लड़की को बचाने में कामयाब नहीं हो सकी। बाद में उनके शव बरामद हो गए।

2. कुमारी मनभलंग सुचेन ने अपनी जान की गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए एक गर्भवती महिला की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

18. श्रीमती ललचावनी,
पत्नी पु. जमिगलियाना,
डर्टलांग बेंग्थर, मिजोरम-796025.

4-1-1995 को लगभग प्रातः 11.00 बजे डर्टलांग बेंग्थर के पु. ललबिअकलियाना के घर में लगी आग ने पूरे घर को अपनी चपेट में ले लिया। पु. ललबिअकलियाना की पुत्री ने, जो पास के ही एक स्टाल में खड़ी थी, आग को देख लिया और सहायता के लिए चीखी-चिल्लाई। उसकी चीख-पुकार सुनकर उनके पड़ोस की श्रीमती ललचावनी सहायता के लिए दौड़ी आई।

मुख्य द्वार पर पहले ही आग लगी देखकर वह एक खिड़की के रास्ते जलते हुए मकान में घुस गई । धुएं और लपटों के बीच, वह घर में पड़ी 83 वर्षीय अपंग वृद्धा, श्रीमती बीलानेनी को बाहर निकाल लाई ।

2. श्रीमती ललथावनी ने अपनी जान की भारी जोखिम में डालकर एक निःसहाय महिला की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

19. श्री बिक्रम साहू,
गांव तथा डाकघर तिकाड़पाड़ा,
जिला अंगुल, उड़ीसा ।

25-12-1992 को यूनाइटिड कमर्शियल बैंक की सम्बलपुर शाखा का स्टाफ अपने परिवार के सदस्यों के साथ तिकाड़पाड़ा में पिकनिक पर गया था । जबकि उनमें से कुछ लोग खाना तैयार करने में व्यस्त थे, बच्चों और महिलाओं सहित कुछ व्यक्ति मगरमच्छों को देखने के लिए एक देसी नाव में बैठकर महानदी में तिकाड़पाड़ा के नौका घाट की ओर गए । नाव पुरानी थी और ज्यादा भीड़भाड़ होने के कारण दबाव को सहन नहीं कर सकी, अतः टूटकर किनारे से दूर लगभग 300 मीटर के फासले पर नदी में डूब गयी । उस दुर्घटनाग्रस्त नाव में सवार सभी यात्री किनारे तक पहुंचने के लिए जूझने लगे, लेकिन उनमें से अधिकांश तैरना नहीं जानते थे । लोग किनारे के पास जमा हो गए और निस्सहाय होकर इस दुर्घटना को देखते रह गए और उनमें से कोई एक भी सहायता के लिए आगे नहीं आया । यह देखकर श्री बिक्रम साहू ने, जो वहां खड़े थे, नदी में छलांग लगादी और बचाव कार्रवाई शुरू कर दी । तभी और लोग भी इस बचाव अभियान में शामिल हो गए । अपने इस वीरतापूर्ण कार्य से श्री साहू अन्य लोगों की सहायता से 22 व्यक्तियों को डूबने से बचाने में सफल हुए ।

2. श्री बिक्रम साहू ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना 22 लोगों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

20. श्री सुभाष चन्द्र बेहेरा,
उर्फ बाज बेहेरा, गांव धनमण्डल,
डाकघर सैला बाड़बिल, थाना गोविन्दपुर,
जिला कटक, उड़ीसा ।

20-8-1992 को देवी-कोआल नदी में आयी बाढ़ के कारण खेरासा गांव के निकट स्थित पश्चिमी दिशा का बांध बह गया था । बाढ़ से भयभीत होकर गोविन्दपुर थाना क्षेत्र के 14 गांवों, जो निकट ही स्थित हैं, के कुछ निवासी अपने परिवारजनों और मवेशियों के साथ नदी की बांध पर शरण लेने के लिए जमा हो गए थे । बाढ़ के पानी के कारण पहले स्थान से 50 गज दूर स्थित बांध के एक अन्य हिस्से को भी क्षति पहुंची जिसके परिणामस्वरूप ग्रामवासी बांध के एक छोटे से क्षेत्र में फंस गए थे । पानी की तेज धारा में धीरे-धीरे बांध के उसी क्षेत्र को क्षतिग्रस्त कर दिया जहां ग्रामवासी इकट्ठा हुए थे । इसके परिणामस्वरूप, वहां अपनी हिफाजत के लिए इकट्ठा हुए लोगों तथा मवेशियों की जान को खतरा उत्पन्न हो गया था । इसी समय, धानमण्डल के एक नाविक, श्री सुभाष चन्द्र बेहेरा उर्फ बाज बेहेरा ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपनी छोटी नाव में बांध के क्षतिग्रस्त हिस्से के दूसरी तरफ पहुंच कर ग्रामीणों को सकुशल बचा लिया । बांध के इस हिस्से से लोगों को बाहर निकालने का कार्य पूरा होने के कुछ मिनटों के अन्दर ही यह हिस्सा बाढ़ के पानी में बह गया । इसके बाद, श्री बेहेरा ने एक भवन, जो धीरे-धीरे बाढ़ के पानी में डूब गया था, के ऊपर से की गई सहायता की गुहार पर ध्यान दिया । अपनी नाव में सवार होकर श्री बेहेरा विपरीत धारा से संघर्ष करते हुए उस भवन तक पहुंचे तथा वहां रहने वाले लोगों को भवन के गिरने के तुरंत पहले बचा लाने में सफल हुए ।

2. श्री सुभाष चन्द्र बेहेरा उर्फ बाज बेहेरा ने अपनी जान को उत्पन्न गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए बाढ़ के प्रकोप से अनेक ग्रामवासियों के जीवन की रक्षा कर अनुकरणीय साहस एवं मानव जीवन के प्रति सम्मान का परिचय दिया ।

21. श्री चन्द्र प्रकाश मेहरवाल, (जीवन रक्षा पदक की और)
वार्ड सं. 10, गोपालपुरा,
रेलवे कालोनी, सवाई माधोपुर,
राजस्थान ।

श्री कन्हैया लाल बेरवा की पुत्रियां, कुमारी गुड्डी (7 वर्ष), कुमारी मीना (5 वर्ष) तथा कुमारी मीरा (2 वर्ष) 31-3-1994 को अपने घर में अपनी मां की अनुपस्थिति में खेल रही थीं । सीढ़ियों के निकट स्थित बुखारी से खिलौनों की तलाश में कुमारी मीना वहां अपने हाथों में लैम्प लेकर गई थी । बुखारी में रखे पुराने और बेकार टायरों तथा लकड़ियों को दुर्घटनावश लैम्प की लौ से आग लग गई । आग और गर्मी से डर कर कुमारी मीना लैम्प लेकर वापस अपने कमरे में आ गई और अपनी बहनों के साथ फिर से खेलना शुरू कर दिया । इस बीच, बुखारी में लगी आग फैलने लगी । पड़ोसियों ने सोचा कि शायद अनाज भूने जा रहे हैं । तब इन बच्चियों की मां, श्रीमती छोटी बाई घर वापस लौटी तो अपने मकान की छत पर आग को देखकर डर गई । उसने दरवाजे पर दस्तक दी तो अन्दर से बंद था । खतरे को भांपते हुए उसने मदद के लिए शोर मचाया । उनकी चीख-पुकार सुनकर उनके एक पड़ोसी, श्री चन्द्र प्रकाश मेहरवाल अपने घर की छत से होते हुए उस स्थान पर पहुंचे जहां आग लगी थी और इसके बाद फिर उस कमरे में पहुंचे जहां बच्चियां फंसी हुई थीं । मुख्य दरवाजे को खोलकर वह सभी बच्चियों को सकुशल बाहर निकाल लाए । बाद में जल-पात्रों को उठाकर उन्होंने आग बुझाने का प्रयास किया । उस समय एक अन्य पड़ोसी भी आग बुझाने के कार्य में उनके साथ जुट गए थे । आग के कारण छत की सीलिंग गर्म हो गई थी और अधिक ताप होने पर सीलिंग नीचे गिर सकती थी और बच्चियों की जान खतरे में पड़ गयी होती ।

2. श्री चन्द्र प्रकाश मेहरवाल ने अपनी जान को उत्पन्न खतरे की परवाह न करते हुए तीन बच्चियों की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

3. श्री चन्द्र प्रकाश मेहरवाल को इसके पूर्व 1989 में जीवन रक्षा पदक प्रदान किया गया था ।

22. श्री नरेन्द्र कुमार जैन (मरणोपरांत)
प्लाट नं. 126, शिवगंज कालोनी,
जिला एटा,
उत्तर प्रदेश ।

31.3.1994 को लगभग दोपहर 2.00 बजे श्री नरेन्द्र कुमार जैन आगरा जाने के लिए कोटा-आगरा पैसेंजर ट्रेन का महावीरजी रेलवे स्टेशन पर इंतजार कर रहे थे । गलती से वे अपने बच्चों के साथ 4005 डाउन ट्रेन में सवार हो गए जो इंदौर और निजामुद्दीन के बीच चलती है । अन्य यात्रियों ने भी यही किया । यह पता चलने पर कि उक्त ट्रेन निजामुद्दीन जा रही है, ये सभी लोग अपने-अपने सामान के साथ डिब्बे से उतरने लगे । इसी बीच ट्रेन चल पड़ी । जब श्री नरेन्द्र कुमार जैन को यह पता चला कि उनके एक सह-यात्री की 9 वर्षीय पुत्री ट्रेन में ही रह गई है तो वे ट्रेन में सवार हो गए और बच्ची को उठाकर चलती ट्रेन से कूद पड़े । लेकिन, दुर्भाग्यवश वे पटरी पर गिर पड़े और ट्रेन से कुचले जाने के कारण अपने प्राण गंवा बैठे ।

2. श्री नरेन्द्र कुमार जैन ने एक बच्ची जो भयवश चलती ट्रेन से कूद पड़ती, की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया, लेकिन इस प्रयास में उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

23. श्री परबत सिंह सोलंकी,
पुत्र श्री पूनम सिंह,
ग्राम चामरड़िया,
तहसील सोजात, जिला पाली,
राजस्थान ।

1-11-1994 को 7.30 बजे प्रातः एक महिला 4-5 माह के दुधमुंहे बच्चे को गोद में लेकर लोखंडिया बावड़ी में कूद पड़ी थी । 39 फीट गहरी इस बावड़ी में उस समय 27 फुट गहरा पानी भरा था । सहायता के लिए चीख-पुकार सुनकर, लोखंडिया बावड़ी में स्नान कर रहे श्री परबत सिंह घटनास्थल की ओर दौड़े तथा अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए पानी में कूद पड़े । हालांकि, श्री परबत सिंह तैराकी में दक्ष नहीं थे, फिर भी वह बच्चे की जान बचाने में सफल हो गए, लेकिन महिला की जान नहीं बचा सके ।

2. श्री परबत सिंह ने अपनी जान को उत्पन्न खतरे की परवाह न करते हुए एक बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस एवं तत्परता का परिचय दिया ।

24. श्री उदय राम,
पुत्र श्री मोटा राम,
चौकीदार, जैतपुर, पाली जिला,
राजस्थान ।

27-7-1995 को रात के लगभग 9.00 बजे बाढ़ नियंत्रण कक्ष में यह सूचना मिली कि गढ़वाड़ से जैतपुर आ रहा एक टैंकर पुल पार करते समय बांडी नदी में गिर गया । यह टैंकर नदी के तेज बहाव में 300-350 मीटर बह गया था और इसमें सवार 3 व्यक्ति शरण के लिए टैंकर के ऊपर चढ़ गए थे। जिला कलेक्टर के साथ एक बचाव दल घटनास्थल की ओर गया और बचाव कार्य आरम्भ कर दिया । तैराक ने रस्सियों की मदद से फंसे हुए व्यक्तियों को बचाने के लिए अथक प्रयास किए लेकिन पानी के तेज बहाव और अंधेरी रात के कारण सफल नहीं हो सका। बचाव कार्य अगली सुबह तक के लिए स्थगित कर दिया गया । रोह के खंड विकास अधिकारी/नायब तहसीलदार और कुछ ग्रामवासी अस्थाई रोशनी में रात बिताने के लिए वहीं रूक गए और फंसे हुए व्यक्तियों का उत्साह बढ़ाते रहे और उन्हें बातों में लगाए रखा । अगली सुबह लगभग 6.00 बजे उन्होंने टैंकर की ओर रस्सी से बंधी हवा भरी ट्यूबें उनकी ओर तैराईं लेकिन नदी के तेज बहाव के कारण वहां उपस्थित व्यक्तियों में से कोई भी व्यक्ति पानी में घुसने का साहस नहीं जुटा पाया । इसे देखकर, श्री उदय राम ने, जो इस घटना को देखने के लिए वहां आए थे, अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए नदी में छलांग लगा दी, तैरकर टैंकर तक गए और फंसे व्यक्तियों को सकुशल बचाने में सफलता प्राप्त की ।

2. श्री उदय राम ने अपनी स्वयं की जान की जोखिम की परवाह न करते हुए तीन व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

25. श्री भास्कर नन्द पाण्डेय,
न्यू-16, पंजाबीपुरा,
सन्ता सिंह वाली गली,
टेलीफोन एक्सचेंज के पीछे,
दिल्ली रोड, मेरठ,
उत्तर प्रदेश ।

10-6-1993 को डा. हरिराम आर्य इन्टर कालेज का एक छात्र श्री भास्कर नंद पाण्डेय अपने मित्र केशव पोखल के साथ स्नान के लिए हरिद्वार गया था । जब वे सप्तऋषि के निकट गंगा में स्नान कर रहे थे उसी समय जनपद रामपुर के श्री शैलेन्द्र सक्सेना तथा श्री देवी प्रसाद सक्सेना भी अपने परिवार की दो महिलाओं के साथ स्नान कर रहे थे । दुर्भाग्यवश, सक्सेना परिवार के चारों सदस्य गंगा के तेज बहाव में बह गए । घटनास्थल पर काफी भीड़ एकत्र हो गई लेकिन उन्हें बचाने के लिए नदी में

कूदने को कोई तैयार नहीं था । यह देखकर श्री भास्कर नंद पाण्डेय अपने मित्र केशव पोडल के साथ नदी में कूद पड़े, नदी के तेज बहाव से जूझते हुए डूब रहे सभी व्यक्तियों को सुरक्षित बाहर निकल लाए ।

2. श्री भास्कर नंद पाण्डेय ने अपनी जान की परवाह न करते हुए चार व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

26. श्री केशव पोडल,
पुत्र श्री इन्द्र प्रसाद पोडल,
गांव धारबोकराई,
आजर गुड्डी, डाकघर रंग चकवा,
जिला सोनितपुर,
असम ।

10-6-1993 को गीता कुटीर संस्कृत विद्यालय के एक छात्र श्री केशव पोडल अपने मित्र श्री भास्कर नन्द पाण्डेय के साथ स्नान के लिए हरिद्वार गया था । जब वे सप्तऋषि के निकट गंगा में स्नान कर रहे थे उसी समय जनपद रामपुर के श्री शैलेन्द्र चन्द्र सक्सेना तथा श्री देवी प्रसाद सक्सेना अपने परिवार की दो महिलाओं के साथ स्नान कर रहे थे । दुर्घटनावश सक्सेना परिवार के चारों सदस्य गंगा में तेज बहाव में बह गए । घटनास्थल पर काफी भीड़ एकत्र हो गई । लेकिन उन्हें बचाने के लिए नदी में कूदने को कोई तैयार नहीं था । यह देखकर श्री केशव पोडल अपने मित्र श्री भास्कर नन्द पांडेय के साथ नदी में कूद पड़े, नदी की तेज बहाव से जूझते हुए डूब रहे सभी व्यक्तियों को सुरक्षित बाहर निकाल लाए ।

2. श्री केशव पोडल ने अपनी जान की परवाह न करते हुए चार व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

27. मास्टर मन्टू मंडल,
पुत्र श्री बलाई मंडल,
गांव तारानगर,
डाकघर बड़ा तागी, थाना कालीगंज,
जी. पी. मटीयारी, जिला नादिया,
पश्चिम बंगाल ।

2-8-1994 को लगभग दोपहर 12 बजे मास्टर मन्टू कर्माकर और उसकी बहन अमिता कर्माकर अपने माता-पिता को बताए बिना भागीरथी नदी पर गए । दुर्घटनावश, मास्टर मन्टू कर्माकर नदी में गिर गया । यह देखकर कुमारी अमिता कर्माकर अपने भाई को बचाने के लिए नदी में कूद पड़ी । दोनों तैरना नहीं जानते थे और फौरन डूबने लगे । इसे देखकर मास्टर मन्टू मंडल, जो नौका पर सवारी कर रहा था, नदी में कूद पड़ा । उसने अमिता की बांह पकड़ ली और उसे सुरक्षित बाहर निकाल लाया ।

2. छोटी उम्र के होने के बावजूद मास्टर मन्टू मंडल ने अपनी जान की जोखिम की परवाह किए बिना एक लड़की की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

28. श्री दशरथ सरकार,
पुत्र श्री राजेश्वर सरकार,
ग्राम-हरिपुर,
डाकघर-हरिपुर छिटका, जिला नादिया,
(ब्लाक तेहट्टा-1)
पश्चिम बंगाल ।

8-6-1994 को लगभग शाम 4 बजे पश्चिम बंगाल के नादिया जिले के हरिपुर गांव में नये खोदे गए कुएं से जहरीली कार्बन मोनो आक्साइड गैस निकलने लगी । संजीव स्वर्णकार नामक एक लड़का जो कुएं में उतर गया था सांस के साथ जहरीली गैस अंदर जाने के कारण बेहोश होकर गिर पड़ा । कुएं के चारों ओर भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी, लेकिन लड़के को मौत के मुंह से बचाने के लिए कुएं में उतरने का साहस किसी ने नहीं किया। इसे देखकर श्री दशरथ सरकार (29) एक रस्सी के सहारे कुएं में उतर गया । मुश्किल से वह श्री संजीव स्वर्णकार को रस्सी के साथ बांध ही पाया था कि जहरीली गैस से वह स्वयं बेहोश होकर गिर पड़ा । गांववालों ने, जो कुएं की तरफ खड़े थे और रस्सी का दूसरा छोर उनके हाथ में था, उन्हें सुरक्षित बाहर निकाल लिया । श्री सरकार तथा उस लड़के का इलाज किए जाने के बाद दोनों का होश आ गया ।

2. श्री दशरथ सरकार ने अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए, एक लड़के को निश्चित मौत से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

29. श्री दीपक लाल, (मरणोपरान्त)
पुत्र श्री भूप लाल,
साउथ पाइंट, मजार पहाड़,
पोर्ट ब्लेयर,
अण्डमान निकोबार ।

6-2-1995 की सुबह राजकीय माध्यमिक विद्यालय बाँदीगंज, पोर्ट ब्लेयर, के अध्यापक और छात्र सरस्वती पूजा समारोह के अंतिम भाग के रूप में देवी सरस्वती की प्रतिमा को एक ट्रक में लादकर मजार पहाड़ पर विसर्जन के लिए समुद्र के किनारे ले गए । समुद्र के किनारे पहुंचने के पश्चात उत्साही छात्र जयकारे लगाते हुए प्रतिमा को कन्धे पर उठाकर समुद्र के बीच ले गए । समुद्र में लहरें उठ रही थी । अनायास एक बड़ी लहर उठी और उन्हें बहाकर गहरे समुद्र में ले गई । इसके परिणामस्वरूप, चार छात्र डूबने लगे जबकि अन्य किस्मत से उथले पानी की वजह से बच गए । समुद्र के किनारे खड़े हुए के व्यक्तियों ने इस हादसे को देखकर शोर मचाया । सहायता के लिए उनकी पुकार सुनकर स्टेशनरी बेचने वाला एक छोटा दुकानदार, श्री दीपक लाल, जो समुद्र के किनारे के सामने सड़क के उस पार दुकान में अपनी चीजों को लगा रहा था, तुरन्त घटनास्थल पर

दौड़ा आया और अशान्त समुद्र में छलांग लगाकर एक-एक करके तीन लड़कों को बचा लिया। फिर वह चौथे लड़के को, जिसका नाम लक्ष्मन कोंडुला था, बचाने के लिए आगे बढ़ा जिसे पानी का प्रवाह दूर बहा ले गया था। दुर्भाग्यवश, इससे पहले कि वह अपना कार्य पूरा कर पाते एक विशाल लहर दीपक लाल को अपने साथ दूर बहा ले गयी और वह डूब गया। बाद में नौ सेना के गोताखोरों और राज्य तेल प्राधिकरण के स्पीड क्राफ्टों की मदद से श्री दीपक लाल और श्री लक्ष्मण कोन्डुला के शवों को बरामद कर लिया गया।

2. श्री दीपक लाल ने डूबने से तीन व्यक्तियों की जान बचाकर चौथे व्यक्ति की जान बचाने के प्रयास में अपने प्राणों की आहुति देकर अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

30. 13749291 राइफलमैन बलदेव सिंह अत्री,
गांव और डाकघर-कोट,
तहसील : सरकाघाट,
जिला : मंडी,
हिमाचल प्रदेश।

25-8-1994 को रात 8.50 बजे श्री बलदेव सिंह अत्री ने, जो बनोट-स्थित जम्मू और कश्मीर राइफल्स की 19वीं बटालियन की मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट प्लाटून में राइफलमैन हैं, अपने टैन्ट से बाहर आकर देखा कि यूनिट कैम्प क्षेत्र के अंदर स्थित पशु-पालन विभाग के भवन में आग लगी हुई है। वह तत्काल फंसे हुए लोगों और साज-सामान को बचाने के लिए भवन की ओर दौड़े गए। धुएं, ताप और धधकने से विचलित हुए बिना वह सबसे दूर वाले कमरे की तरफ गए, दरवाजा तोड़ डाला और पाया कि दो बच्चे और एक महिला मूर्छित अवस्था में आग के बीच पड़े हुए हैं। उन्होंने तत्काल महिला को उठाया और उसे सुरक्षित बाहर निकाला। इस प्रक्रिया में उनकी बांहें गंभीर रूप से जल गईं। दर्द की परवाह किए बिना उन्होंने दोनों बच्चों को बचाने के लिए फिर से साहसिक प्रयास किया। इस दौरान आग ज्यादा भड़क उठी थी जिसकी वजह से सहायता कार्य और कठिन हो गया। फिर भी, उन्होंने यह कार्य किया और इस प्रक्रिया के दौरान उनकी पीठ, छाती और हाथों पर जलने से घाव हो गए। बाद में दमकलों की सहायता से आग पर काबू पा लिया गया।

2. राइफलमैन बलदेव सिंह अत्री ने आग में फंसे तीन व्यक्तियों को जलकर मौत होने से जान बचाने में उच्च कोटि की कर्त्तव्यनिष्ठा, दृढ़-निश्चय और साहस का परिचय दिया।

31. सेकेण्ड लैफ्टिनेन्ट राजेश सिंह अधिकारी,
(आई. सी.-52574),
गांव-हरी नगर,
डाकघर एवं तहसील-हल्द्वानी,
जिला-नैनीताल,
उत्तर प्रदेश।

18.8.1994 को लगभग शाम 6.00 बजे सेकेण्ड लैफ्टिनेन्ट राजेश सिंह अधिकारी "असाल्ट यूनिवर्सल" नामक नाव में इन्दिरा गांधी नहर में सैर कर रहे थे। नाव में ओ. बी. एम. लगा था और उसमें छह बच्चों सहित 13 व्यक्ति सवार थे। जब नाव तीव्र धारा में बर्डवाल ब्रिज के पूर्व में 5 कि. मी. की दूरी पर थी, तब नाव उलट गई जिससे उसमें सवार व्यक्तियों की जान को खतरा पैदा हो गया। सैकेण्ड लैफ्टिनेन्ट राजेश सिंह अधिकारी पहले व्यक्ति थे जो पानी की सतह पर ऊपर आए। उन्होंने तत्काल बचाव कार्य शुरू किया। तुरन्त ही उन्होंने एक वयस्क और दो बच्चों को उल्टी हुई उस नाव के ऊपर चढ़ा दिया। तत्पश्चात्, एक महिला को देखते ही, जो सहायता के लिए पुकार रही थी, वह तब तक उसे बचाने के प्रयास में लगे रहे जब तक कि एक अन्य व्यक्ति ने उसे बचा नहीं लिया। इसी दौरान उन्होंने करीब 75 गज दूर बहाव के रुख की ओर एक महिला का हाथ अदृश्य होते देखा। वह तैर कर उस जगह गए और उसे बचाने के साहसिक प्रयास में लग गए। किन्तु, वे उसे बचा नहीं सके और इस प्रक्रिया में स्वयं बहुत अधिक थक चुके थे। पानी से बाहर आने पर उन्होंने देखा कि उल्टी हुई नाव उन तीन व्यक्तियों के वजन से डूब रही थी जिन्हें उन्होंने बचाया था। वह पुनः हरकत में आए और एक बच्चे को किनारे पर ले आए। दूसरे बच्चे को उल्टी हुई नाव पर न पाकर उन्होंने नाव के नीचे की ओर गोता लगाया और दूसरे लोगों की सहायता से फंसे हुए बच्चे को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। इस तरह सेकेण्ड लैफ्टिनेन्ट राजेश सिंह अधिकारी ने अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए चार व्यक्तियों की जान बचाई और दो अन्य को डूबने से बचाने का प्रयास किया।

2. सेकेण्ड लैफ्टिनेन्ट राजेश सिंह अधिकारी ने अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए 4 व्यक्तियों की जान बचाने में उच्च कोटि की कर्त्तव्य-निष्ठा, दृढ़-निश्चय और साहस का परिचय दिया।

32. 1478115, सापर जगमोहन लाल,
माधपुरा गांव, करासन डाकघर,
नारायणगढ़ तहसील,
अम्बाला जिला,
हरियाणा।

17-9-93 को फील्ड इंजीनियरिंग सेक्शन इंडियन मिलिटरी अकादमी, देहरादून, में तैनात सापर जगमोहन लाल (सं. 1478115) ने एक्स पर्वत रक्षा से आई. एम. ए. लौटते समय गुच्छूपानी पर तेजी से बहती धारा के समीप एकत्र हुई भारी भीड़ को देखा। भीड़ धारा के तेज प्रवाह के साथ बहती चली जा रही लगभग 28 वर्ष की एक महिला पर्यटक को देख रही थी। यह देखकर सापर जगमोहन लाल घटनास्थल की ओर दौड़े, धारा के प्रबल प्रवाह में कूद पड़े और उस महिला को डूबने से बचाने में सफल रहे। इस प्रक्रिया में सापर जगमोहन लाल को चोटें आयीं क्योंकि धारा का प्रबल वेग उसे लगभग 200 मीटर तक बहाकर ले गया था।

2. सापर जगमोहन लाल ने अपनी जान की परवाह न करके प्रबल वेग वाली धारा में डूबने से एक महिला की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

33. 2582230 नायक सत्यन,
3-मद्रास, मार्फत 56 ए. पी. ओ.

20-7-92 को सुबह मद्रास रेजिमेंट की तीसरी बटालियन का नायक सत्यन चंडीमंदिर में अस्थायी ड्यूटी के लिए पंजाब रोडवेज की एक बस में अम्बाला से सफर कर रहा था। 30 मिनट के सफर के बाद अम्बाला-चण्डीगढ़ हाईवे पर लालरू गांव के पास चालक नियंत्रण खो बैठा और 50 यात्रियों से भरी यह बस एक पुलिया की रेलिंग से टकराती हुई उलट गयी और उसके अगले हिस्से में आग लग गयी। नायक सत्यन ने, जो बस में पीछे की तरफ बैठा हुआ था, अपना संयम तथा सूझ-बूझ नहीं खोयी और खिड़की तोड़कर बस से बाहर निकल आया। बस से बाहर आ जाने के बाद उसने खिड़कियों की सीखचे तोड़ डालीं और आर्मी के एक अधिकारी समेत बस में फंसे दस से भी अधिक यात्रियों को खींचकर बाहर निकाला। तब तक पूरी बस में आग फैल चुकी थी और यह संभावना बन गई थी कि ईंधन की टंकी में किसी भी क्षण विस्फोट हो सकता है। इस खतरनाक स्थिति से विचलित हुए बिना नायक सत्यन ने पिछली खिड़की का शीशा तोड़ डाला तथा आग में जली 3 महिलाओं और एक बच्चे को खींचकर बाहर निकाल लिया। इस प्रक्रिया में उसके शरीर पर भी जलने से कुछ घाव हो गए। इस समय घटनास्थल के पास एकत्र लोग जलती बस को तो देख रहे थे, लेकिन उनमें से कोई भी फंसे हुए यात्रियों की मदद के लिए आगे नहीं आया। नायक सत्यन अकेला ही तब तक बचाव कार्य करता रहा जब तक कि आग पूरी बस में न फैल गई तथा बचाव कार्य असम्भव नहीं हो गया।

2. नायक सत्यन ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए जलती हुई बस के कई व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

34. जी.एस. 139665-एफ सफाईवाला अमीचन्द,
गांव व डाक-सेखपुरा तुर्क,
जिला-बिजनौर, उत्तर प्रदेश।

7-12-1994 को रात 11.00 बजे जैसमी (मैनपुरी) में 82-आर.सी.सी. परिसर के समीप वाले एक भवन में आग लग गई। फायर अलार्म सुनकर जी.एस. 139665-एफ सफाईवाला अमीचन्द घटनास्थल की ओर भागा। इस बीच, भवन के सम्पूर्ण लकड़ी के ढांचे को आग ने पकड़ लिया था और आग पास के भवनों में फैलने लगी थी। उस क्षेत्र के लोग जलते भवन के आस-पास एकत्र हो गए लेकिन किसी ने भी आग बुझाने की हिम्मत करने की पहल नहीं की। यह देखकर श्री अमीचन्द वापिस आर.सी.सी. परिसर की ओर भागा और तीन अग्निशमन यंत्र अपने साथ ले आया और आग बुझाने में लग गया। उसके पराक्रमी प्रयास से प्रेरित होकर अन्य लोग भी आग बुझाने के काम में लग गए। भवन में दो बच्चों के फंसे होने की बात सुनकर वह जलते भवन में घुस गया और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना बच्चों को सुरक्षित बचा लाया। यह मानवीय कार्य करने के बाद, वह आग बुझाने में लग गया और इस प्रक्रिया में थक कर चूर हो गया था और अचेत होकर गिर पड़ा। उसे डाक्टरी इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया।

2. जी.एस. 139665-एफ सफाईवाला अमीचन्द ने अपनी जान को गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए दो बच्चों को जान बचाने में जबरदस्त पहलकदमी तथा नेतृत्व के उत्कृष्ट गुणों का परिचय दिया।

35. जी.एस.-159743-पी ओवरसीयर अशोक कुमार सिन्हा,
गांव व डाक-पूरहारा, तहसील-बमपुरा,
जिला-औरंगाबाद, बिहार।

प्रोजेक्ट हिमांक की 355 रोड मेन्टीनेंस प्लाटून के जी.एस.-159743-पी ओवरसीयर अशोक कुमार सिन्हा जो जिला-कारगिल-लेह मार्ग, दक्षिणी लेह पर मार्ग को सीधा करने के लिए फोरमेशन कटिंग के कार्य के प्रभारी के रूप में खालसी में तैनात थे। 22-2-96 को दिन में 11.30 बजे जब विस्फोटक भरने के लिए खुदाई कार्य चल रहा था तभी एक भारी चट्टान का एक हिस्सा धंस गया और सी.पी.एल. हीरा बहादुर पर आ गिरा और सी.पी.एल. मंटे नन्दलाल राय और सी.पी.एल. सुनील मुरमू से जा टकराया जिससे वे पहाड़ी से नीचे लुढ़कने लगे। यह देखकर ओवरसीयर अशोक कुमार सिन्हा ने अदम्य साहस और मुस्तैदी का परिचय देते हुए अपने को फैलाकर उनको पकड़ लिया और 100 मीटर नीचे गहराई में गिरने से बचा लिया। चोट लगने के कारण सी.पी.एल. हीरा बहादुर की मौत हो गई। सी.पी.एल. सुनील मुरमू और सी.पी.एल. मंटे नंदलाल राय को विमान से पी.जी.आई., चंडीगढ़ में इलाज के लिए ले जाया गया।

2. ओवरसीयर अशोक कुमार सिन्हा ने अपनी जान को गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए दो व्यक्तियों की जान बचाने में असाधारण साहस और तत्परता का परिचय दिया।

36. मास्टर अजीत कुमार परीजा,
पुत्र श्री अलेख चन्द परीजा,
मुकाम पिनपुर, डाकघर बाबूअंग,
जिला कटक, उड़ीसा-754134

17-3-94 को दिन में लगभग 11 बजे महानदी नदी को पार करते समय एन.सी.सी. कैडिट, मास्टर ए. के. परीजा ने सहायता के लिए चीख-पुकार सुनी। बाढ़ से उफनती नदी को तेज बहाव में एक लड़के को बहते देखकर वह नदी में कूद पड़े और दूर तक तैरने के बाद उस लड़के के पास पहुंचे और उसे सुरक्षित बचा लाए। लड़का बेहोश हो गया था। मास्टर परीजा और नदी किनारे एकत्र हुए अन्य लोगों ने उसे प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराई। तत्पश्चात उस लड़के को चिकित्सा सहायता के लिए स्थानीय अस्पताल ले जाया गया।

2. कम उम्र का होने के बावजूद मास्टर ए. के. परीजा ने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालकर एक लड़के को डूबने से बचाने में अनुकरणीय पहलकदमी और मुस्तैदी का परिचय दिया।

37. मास्टर अविनाश पाण्डेय,
पुत्र श्री राम गोपाल पाण्डेय,
ग्राम-जांजगीर, जिला-बिलासपुर,
मध्य प्रदेश-495668

27-?-94 को चार किशोर होली के बाद नहाने के लिए पोंडीगांव के समीप एक नहर पर गए। अचानक उनमें से एक गहरे पानी में गिर गया और डूबने लगा। उसकी दशा देखकर अन्य तीन भी उसे बचाने के प्रयास में लग गए लेकिन पानी के तेज बहाव ने उनको भी चपेट में ले लिया। घबराहट में वे चीखने-चिल्लाने लगे। उनकी चीख-पुकार सुनकर मास्टर अविनाश पाण्डेय ने, जो तभी नहाकर हटा था, नहर में छलांग लगा दी और उनमें से दो को बचाने में सफल रहा। शेष दो को जो पानी के वेग से बहकर दूर चले गए थे, नहीं बचाया जा सका।

2. कम उम्र के होने के बावजूद मास्टर अविनाश पाण्डेय ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए दो बच्चों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

38. मास्टर दीपक राय,
पुत्र श्री राम प्रसाद,
मार्फत राजीव गांधी विद्यालय, बिहारी बिल्डिंग,
पटना, ठेका बैटरी बस स्टैण्ड के पास,
पूर्वी दिल्ली।

14-9-94 को लगभग दोपहर 12 बजे राजीव गांधी विद्यालय के छात्र 40 फुट लम्बी और 18 फुट चौड़ी छप्पर की छत के नीचे बैठे हुए थे। लगातार वर्षा होते रहने के कारण छत पर पानी इकट्ठा होना शुरू हो गया। इसके परिणामस्वरूप, छत बैठ गयी और बांस की बल्लियां और खम्भे जो छत को संभाले थे, ढीले पड़ने लगे। आतंकित होकर अध्यापक और अन्य छात्र उसी स्थान पर खड़े रहे। 150 छात्रों और अध्यापकों की जान को उत्पन्न खतरे को महसूस करते हुए, मास्टर दीपक राय ने छत पर चढ़ने और पानी को बाहर फेंकने का साहसिक प्रयास किया। हालांकि, बांस उसके भार को वहन नहीं कर सके और छत को संभाले खड़ी कुछ डंडियां टूट गईं। मास्टर दीपक राय ने विचलित हुए बिना एक चाकू से तरपाल को उस जगह से फाड़ डाला जहां पानी इकट्ठा हो गया था। तब पानी नीचे बह गया। यदि मास्टर दीपक राय तेजी से कार्रवाई न करते तो छत ढह गई होती और 150 व्यक्तियों की जान खतरे में पड़ जाती।

2. मास्टर दीपक राय ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए अपने स्कूल के छात्रों/अध्यापकों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस, सूझबूझ और तत्परता का परिचय दिया।

39. कु. गीतांजली सुखीजा,
पुत्री, श्री अजीत कुमार सुखीजा,
मार्फत पंकज हाल,
ई/212, 31 जनवरी रोड, पाला, फाउंटेनहास,
पणजी-गोवा-403001

26-5-94 को लगभग शाम 6 बजे कु. गीतांजली सुखीजा (12 वर्ष), श्री रियान सी-क्वेरा (18 वर्ष) और उनके मित्र मीरामर बीच, गोवा में जलपान कर रहे थे कि अचानक समुद्र के किनारे पर कुछ शोरगुल हुआ। कु. सुखीजा और श्री क्वेरा घटनास्थल की ओर लपके। यह सुनकर कि एक युवती लहरों के साथ बह गई है वे समुद्र में कूद पड़े। खराब मौसम के कारण लड़की का पता लगाना कठिन हो गया था और लगातार प्रयास करने के बाद वे लड़की का पता लगाने में सफल हो गए। कु. गीतांजली ने श्री रियान की मदद से उस लड़की को सुरक्षित बाहर खींच लिया। लड़की को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन वह रास्ते में ही चल बसी।

2. कु. गीतांजली सुखीजा ने एक लड़की के प्राण बचाने के प्रयास में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

40. मास्टर कार्तिकेयन कल्मुथ,
पुत्र श्री पच्चियाप्पन,
पल्ला स्ट्रीट, कुब्बीपलम कालोनी,
पल्लीयानेल्लियानूर डाकखाना,
पाण्डिचेरी-605107

15-11-94 को 10-12 वर्ष की आयु वर्ग की चार लड़कियां पम्बा नदी में नहा रही थीं। नदी में बाढ़ आई होने के कारण वे पानी के तेज प्रवाह में बह गईं। यह देखकर पास में खड़े मास्टर कार्तिकेयन ने नदी में छलांग लगा दी और उनमें से तीन को बचाने में सफल रहे लेकिन वह चौथी लड़की को नहीं ढूंढ पाये और सहायता के लिए पुकार की। उसकी पुकार सुनकर गांव वाले घटनास्थल पर एकत्र हो गए लेकिन वे चौथी लड़की की लाश ही ढूंढ पाए।

2. कम उम्र होने के बावजूद मास्टर कार्तिकेयन कल्मुथ, ने अपनी जान को गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए डूबने से तीन लड़कियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

41. करूणाकर मूर्ति के. सी.,
पुत्र श्री चन्द्रय्या के. एस.,
10वीं कक्षा, ए-अनुभाग,
पब्बा पी. यू. कालेज, पेरियापटना,
जिला-मैसूर, कर्नाटक-571107

28-4-94 को लगभग शाम 4.50 बजे श्रीमती गौरम्मा अपनी पुत्री कु. जायम्मा (25 वर्ष) के साथ पानी लाने के लिए पास के कुएं पर पहुंचे। गांव से लगभग 100 मी. दूर इस कुएं का उपयोग खेती के काम के लिए किया जाता है और उस पर कोई चारदीवारी नहीं बनी हुई है। कुआं 60 फीट गहरा है और उसमें से पानी खींचने के लिए बर्तन को डुबाने के लिए लगभग 15 फीट नीचे उतरना पड़ता है। पानी खींचते समय कु. जयम्मा अचानक फिसलकर कुएं में जा गिरी और डूबने लगी। अपनी बेटी को डूबते देख श्रीमती गौरम्मा कुएं में कूद पड़ी। कुएं के पास खड़ी एक दूसरी महिला ने

सहायता के लिए चीख-पुकार की । उनकी चीख-पुकार सुनकर मास्टर करूणाकर मूर्ति के. सी. जो कुंए के पास ही अपने बगीचे में काम कर रहे थे, घटनास्थल पर दौड़ आए और कुंए में छलांग लगा दी । वह उन दोनों को कुंए से बाहर निकाल लाए ।

2. कम उम्र के होने के बावजूद, मास्टर करूणाकर मूर्ति के. सी. ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए डूबने से दो महिलाओं की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

42. कु. ललिता गोंडा,
पुत्री श्री नत्थू राम गोंडा, गांव-खोलली बाग बहार,
जिला-रायपुर-493449
मध्य प्रदेश ।

29-8-94 को मूसलधार वर्षा के कारण श्री नत्थूराम के पड़ोसी की झोपड़ी ढह गई । झोपड़ी की दीवार गिरने ही वाली थी कि श्री नत्थूराम की पुत्री, कुमारी ललिता (9 वर्ष) ने अपनी छः माह की बहन लता को उठाया और पूरी तरह ढककर उसके ऊपर लेट गई । इस बीच दीवार ढह गई और कु. ललिता के ऊपर आ गिरी । तत्पश्चात, पड़ोसियों ने मलबे के नीचे दबी बच्चियों को बाहर निकाला । कु. ललिता को गंभीर चोटें आयी और उसे अस्पताल में इलाज करवाना पड़ा ।

2. कम उम्र की होने के बावजूद, कु. ललिता गोंडा ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए मलबे के नीचे दब जाने से अपनी बहन की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

43. कु. रूचि पालिवाल,
पुत्री श्री संजय कुमार, 11/20, बाग मुजफ्फर खान,
आगरा, उत्तर प्रदेश ।

30-6-95 को दोपहर 2 बजे मास्टर रोहित (6 वर्ष) गंगा के पास खेल रहा था कि अचानक फिसलकर पानी में आ गिरा और डूबने लगा । यह देखकर पास खड़ी कु. रूचि उफनती हुई नदी में कूद पड़ी और बच्चे को पकड़ने में सफल हो गई । बच्चे ने भी कु. रूचि को ऐसे पकड़ लिया कि कु. रूचि डूबने लगी । उसने स्वयं को छुड़ाने के लिए बच्चे को जोर से धक्का दिया । परिणामस्वरूप, बच्चा फिर डूबने लगा । काफी संघर्ष के बाद कु. रूचि बच्चे की कमीज को पकड़ने में कामयाब हो गई । उसे किनारे की ओर खींच लाने का प्रयास करने लगी । इस बीच, किनारे पर लोग इकट्ठा हो गए और उन्होंने इन बच्चों को पानी से बाहर निकलने में मदद की ।

2. कम उम्र की होने के बावजूद कु. रूचि ने अपनी जान की गंभीर जोखिम की परवाह न करते हुए डूबने से बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

44. कु. उर्मिला ठाकुर,
पुत्री श्री शिव सिंह ठाकुर, सूरज निकेतन स्कूल,
नीम ताल रोड, विदिशा-464 001
मध्य प्रदेश ।

25-11-94 को बिट्टू नाम का एक दो वर्ष का बच्चा बिना किसी की निगरानी के सड़क पर खेल रहा था । दूसरी तरफ से तेज गति से एक ट्रक चला आ रहा था । यह देखकर कु. उर्मिला (10 वर्ष) ने स्थिति की गंभीरता को महसूस किया और वह बालक की ओर दौड़ी आई, उसे उठाकर सुरक्षित ले आई । इस प्रकार कु. उर्मिला ने एक बच्चे की जान बचाली ।

2. कम उम्र की होने के बावजूद, कु. उर्मिला ठाकुर ने एक बच्चे की जान बचाने में सूझबूझ और पहलकदमी का परिचय दिया ।

45. मास्टर विनीश आर.,
पुत्र श्री रवीन्द्रन, मुन्डुचिरा हाउस,
नाडुविलामुरी, थालवाड़ी डाकखाना,
केरल-689572

12-9-94 को मास्टर विनीश अपने पड़ोसी मास्टर सुजीत के साथ खरीदारी करने पास के एक स्टोर में गए । मास्टर विनीश दुकान में चले गए लेकिन मास्टर सुजीत पास की नहर की ओर टहलने निकल गए । पम्पा नदी में मानसून की बाढ़ के कारण नहर का पानी ऊपर से बहकर निकल रहा था । मास्टर सुजीत अचानक नहर में गिर गए और सहायता के लिए चिल्लाने लगे । उनकी चीख-पुकार सुनकर मास्टर विनीश नहर की ओर दौड़े और देखा कि मास्टर सुजीत नहर में लगभग डूब-सा गया है और केवल उसकी उंगलियों की नोक ही पानी से ऊपर दिखाई दे रही थी । अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना मास्टर विनीश नहर में कूद पड़े, सुजीत को पकड़ लिया और उसे सुरक्षित बाहर ले आए । इस बीच, आने जाने वाले घटनास्थल पर एकत्र हो गए और उन्होंने पानी से बाहर आने में बच्चों की मदद की ।

2. कम उम्र का होने के बावजूद, मास्टर विनीश ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना अपने मित्र को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

46. मास्टर वीरेन्द्र सिंह चुल्लिंग,
पुत्र गोविन्द राम,
गांव-तहसील-हंगरंग, डाकघर-हांगो (वाया) पूह,
जिला-किन्नौर-172111
हिमाचल प्रदेश ।

2-12-94 की आधी रात के समय, जब चिल्लैंग गांव के लोग सो रहे थे, मास्टर वीरेन्द्र की नींद अचानक खुली और उसने

देखा कि पूरा गांव विध्वंसकारी आग की चपेट में आ गया है । उसने अपने छोटे भाई को घर से बाहर निकाला और शोर मचा दिया । तब तक पांच घर आग की भेंट चढ़ चुके थे । उसका चीखना-चिल्लाना सुनकर गांव वाले जाग गए और आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े ।

2. कम उम्र का होने के बावजूद मास्टर वीरेन्द्र सिंह चुल्लिंग ने गांव वालों को सचेत करने के लिए फौरन हरकत में आकर अपनी सूझबूझ और अदम्य साहस का परिचय देते हुए आग से गांव वालों की जान और सम्पत्ति की रक्षा की ।

गिरीश प्रधान, निदेशक

कृषि मंत्रालय
(कृषि और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 27 फरवरी 1996

संकल्प

सं. 12-22/94-फ. प्र.-5.—भारत सरकार ने दिनांक 26 मई, 1992 के संकल्प संख्या 18-5/95 फसल प्रशासन-5 द्वारा गठित भारतीय चावल विकास परिषद् का तत्काल प्रभाव से पुनर्गठन करने का निर्णय लिया है । पुनर्गठित परिषद् में निम्नलिखित शामिल होंगे :

अध्यक्ष

भारत सरकार द्वारा नामित किया जाने वाला एक गैर-सरकारी व्यक्ति ।

उपाध्यक्ष

कृषि आयुक्त, कृषि मंत्रालय, कृषि और सहकारिता विभाग, नई दिल्ली ।

सदस्य

(क) संसद सदस्य

संसद के तीन सदस्य (दो लोक सभा से तथा एक राज्य सभा से), जो संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा नामित किए जाएंगे ।

(ख) राज्य सरकारों के प्रतिनिधि :

निम्नलिखित राज्य सरकारों के कृषि विभाग से एक-एक प्रतिनिधि, जो संबंधित राज्य सरकारों द्वारा नामित किए जाएंगे ।

1. आंध्र प्रदेश
2. असम
3. बिहार
4. हरियाणा
5. जम्मू व कश्मीर
6. कर्नाटक
7. केरल
8. मध्य प्रदेश
9. महाराष्ट्र
10. उड़ीसा
11. पंजाब
12. उत्तर प्रदेश
13. तमिलनाडु
14. पश्चिम बंगाल

ग. केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि :

1. महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली या उसका नामित ।
2. संयुक्त सचिव (विस्तार) कृषि मंत्रालय, कृषि और सहकारिता विभाग ।
3. अर्थ एवं सांख्यिकी सलाहकार, अर्थ एवं सांख्यिकी निदेशालय, नई दिल्ली ।
4. कृषि विपणन सलाहकार, ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार मंत्रालय ।
5. निदेशक, केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक।
6. निदेशक, चावल अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद ।
7. संयुक्त आयुक्त, (भा. खा. नि.) कृषि मंत्रालय, कृषि और सहकारिता विभाग, नई दिल्ली ।
8. योजना आयोग का एक प्रतिनिधि ।
9. खाद्य मंत्रालय, नई दिल्ली का एक प्रतिनिधि ।
10. नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, नई दिल्ली का एक प्रतिनिधि ।

घ. उत्पादकों के प्रतिनिधि :

(क) निम्नलिखित चावल उत्पादक राज्यों से संबंधित राज्य सरकारों द्वारा नामित किए जाने वाले उत्पादकों के चौदह प्रतिनिधि :—

	प्रतिनिधियों की संख्या
1. आन्ध्र प्रदेश	एक
2. असम	एक
3. बिहार	एक
4. हरियाणा	एक
5. जम्मू ग कश्मीर	एक
6. कर्नाटक	एक
7. केरल	एक
8. मध्य प्रदेश	एक
9. महाराष्ट्र	एक
10. उड़ीसा	एक
11. पंजाब	एक
12. उत्तर प्रदेश	एक
13. तमिल नाडु	एक
14. पश्चिम बंगाल	एक

ङ मजदूरों के प्रतिनिधि :

1. फार्मों में कार्यरत मजदूर—एक

2. कारखानों में कार्यरत मजदूर—एक

च. चावल मिल संघों का एक प्रतिनिधि ।

छ. ऐसे अन्य व्यक्ति, जो समय-समय पर भारत सरकार द्वारा नामित किए जाएं ।

4. प्रेक्षक :

(जो परिषद् के सदस्य नहीं होंगे, लेकिन जिन्हें परिषद् के विचार विमर्श में सहायता करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा) ।

1. अध्यक्ष, कृषि लागत और मूल्य आयोग, नई दिल्ली या उसका नामित ।

2. वित्तीय सलाहकार, कृषि मंत्रालय, कृषि और सहकारिता विभाग, नई दिल्ली ।

3. अध्यक्ष, राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, नई दिल्ली या उसका नामित ।

5. सदस्य सचिव :

निदेशक, चावल विकास निदेशालय, पटना परिषद के सदस्य सचिव के रूप में कार्य करेंगे ।

2. परिषद् एक सलाहकार निकाय होगी और इसके निम्नलिखित कार्य होंगे :—

1. चावल के संबंध में केन्द्रीय तथा राज्य क्षेत्रों में विकास कार्यक्रमों पर विचार करना, समय-समय पर उनकी प्रगति की समीक्षा करना और चावल के उत्पादन को बढ़ाने के उपायों की सिफारिश करना ।

2. चावल के उत्पादन तथा विपणन एवं कपास उत्पादकों को लाभकारी मूल्य दिलाने से संबंधित समस्याओं पर विचार करना और इन मामलों के संबंध में सरकार को सलाह देना ।

3. घरेलू तथा निर्यात मंडियों में चावल की विभिन्न किस्मों की मांग पर विचार करना तथा चावल उत्पादन कार्यक्रमों में तदनुसार आवश्यक व्यवस्था करने के संबंध में सरकार को सलाह देना ।

4. चावल के उत्पादन के संबंध में छोटे तथा सीमांत किसानों की विशेष आवश्यकताओं पर विचार करना और उन्हें पूरा करने के लिए उचित उपाय करने हेतु सुझाव देना ।

5. चावल से संबंधित अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रम के बीच समन्वय करना और चावल की गुणवत्ता तथा उत्पादकता में सुधार लाने की आवश्यकताओं के बारे में सलाह देना, और

6. आवश्यक समझे, जाने वाले अन्य संबंधित मामलों पर समय-समय पर सरकार को सलाह देना ।

3. परिषद् को, विशेष मामलों पर विचार करने के लिए स्थायी समिति, तकनीकी समिति और तदर्थ समिति स्थापित करने तथा विशेष प्रयोजनों के लिए आवश्यकतानुसार कृषि विश्वविद्यालयों तथा अन्य विशेष हितों के प्रतिनिधियों जैसे सदस्यों को सहयोजित करने का अधिकार होगा ।

4. परिषद् की बैठक समय-समय पर चावल उत्पादक क्षेत्रों तथा व्यापार एवं उद्योग के महत्वपूर्ण केन्द्रों में होगी और भारत सरकार को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगी ।

5. परिषद् तब तक काम करती रहेगी जब तक कि सरकार के संकल्प द्वारा इसे समाप्त न कर दिया जाए । परिषद् के

अध्यक्ष तथा अन्य गैर सरकारी सदस्यों का कार्यकाल परिषद् में उनके नामित होने की तिथि से तीन वर्ष होगा, बशर्ते भारत सरकार के विशेष आदेश द्वारा इस अवधि को घटाया या बढ़ाया न जाए ।

6. संसद के सदस्यों में से नामित किए गए परिषद् के सदस्य सांसद न रहने पर परिषद के सदस्य नहीं रहेंगे ।

7. सरकारी निकायों जैसे समितियों, परिषदों आदि में काम कर रहे संसद सदस्य ऐसी निकायों की बैठकों में भाग लेने पर समय-समय पर संशोधित संसद सदस्यों के वेतन, भत्ते और पेंशन अधिनियम, 1954 और इसके तहत बनाए गए नियमों के अंतर्गत यात्रा/दैनिक भत्ता पाने के हकदार होंगे ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी राज्य सरकारों, संघ शासित प्रदेशों के प्रशासनों तथा भारत सरकार के मंत्रालयों, योजना आयोग, मंत्रिमंडल सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, लोक सभा तथा राज्य सभा सचिवालय को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सर्वसाधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

वीणा उपाध्याय, संयुक्त सचिव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 19 मार्च 1996

सं. एफ. 18-7/91-टी. डी 5/टी. एस. 4.—शैक्षणिक अर्हता मूल्यांकन बोर्ड की सिफारिशों के आधार पर भारत सरकार ने इलेक्ट्रानिक्स एवं यांत्रिकी इंजीनियरी सैनिक कालेज, सिकन्दराबाद द्वारा प्रदान की जाने वाली इस्त्रीकरण परिशिल्पी (संगणक) [आर्मामेंट आर्टिफिसर (कम्प्यूटर)] अर्हता को केन्द्रीय सरकार के अधीन उपयुक्त क्षेत्र में पदों और सेवाओं में रोजगार के प्रयोजनार्थ संगणक इंजीनियरी डिप्लोमा के समकक्ष मान्यता प्रदान करने का निर्णय लिया है । उपयुक्त मान्यता, वर्ष 1988 से प्रभावी होगी ।

विजय भारत, निदेशक (तक.)

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 30 जनवरी 1996

संकल्प

स. ई आर बी/1/95/23/25.—रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के 11-7-95 के समसंख्यक संकल्प को देखें जो कोंकण रेलवे कारपोरेशन की कार्यप्रणाली पर शिकायतों की जांच करने हेतु संसद सदस्यों की एक समिति का गठन करने के बारे में है ।

2. रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) ने यह विनिश्चय किया है कि इस समिति का कार्यकाल 15-2-96 तक की अवधि के लिए बढ़ा दिया जाए ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सर्वसाधारण के सूचनार्थ भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

आई. एस. गोयल, उप सचिव (स्थापना), रेलवे बोर्ड ।

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th March 1996

No. 24-Pre/96.—The President is pleased to approve the award of 'Sarvottam Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Master Sudhir Sardana,
34, 8, Krishna Colony,
Bhiwani,
Haryana.

On 7-7-1994 at about 9.30 P.M., two robbers entered the house of Dr. Om Parkash Sardana in Krishna Colony, Bhiwani on the pretext of seeking medical aid. Dr. Sardana who was having his clinic at Jain Chowk, was taking his dinner alongwith his family members. Master Sudhir asked the intruders to wait for his father to finish his meal. Both of them sat waiting on a cot lying in the compound of the house. Meanwhile one of them locked the door of the gallery which made Master Sudhir suspicious of their intentions and he asked them the reasons for locking the door. Meanwhile Dr. Sardana came to the compound leaving his meal but he was pushed down by the robbers. One of the robbers, who was later identified as Shri Rohtash pulled his pistol and fired at the Doctor injuring him in the chest. The injured Dr. Sardana, his wife, son and daughter all pounced on the robber. Despite his tender age, Master Sudhir Sardana did not leave the robber and also raised alarm for help. Meanwhile the second robber fled the site after opening the door and the other robbers who were waiting outside the house also followed suit in panic. Shri Rohtash tried to free himself from the clutches of Master Sudhir and also threatened to kill him but Master Sudhir remained undeterred and tightened his grip till the arrival of the neighbours who responded to his calls for help. The apprehended robber was later on handed over to the Police. Dr. Sardana later succumbed to the bullet injury.

2. Despite his tender age, Master Sudhir Sardana showed conspicuous courage and bravery in getting the robber arrested.

2. Master Prahlad Singh,
S/o Shri Jagat Singh,
Village & P. O. Munduwa,
Teh. Champawat,
Distt. Pithoragarh,
Uttar Pradesh.

On 7-11-1994, Master Prahlad Singh, a student of Junior High School, alongwith his five school-mates, was going to the school situated in remote hilly terrain about 2 km away from his residence. On that fateful day, when they were on their way to school, they were attacked by a wild bear. Stunned by this unexpected attack, children began to run screaming for help. Undaunted by the turn of events, Shri Prahlad Singh, despite his tender age pounced upon the bear enabling others to escape. The enraged bear swiped at Master Singh, tearing his right arm, digging its sharp nails into his head and right eye and inflicting grave injuries on his face.

2.Master Prahlad Singh showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of 5 children unmindful of the grave risk to his own life.

G. B. PRADHAN,
Director.

No. 25-Pres/96.—The President is pleased to approve the award of 'Uttam Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Master Teging Marak,
C/o Shri Nawan Marak,
Village Rongsang Ajirigiri,
West Garo Hills District,
Meghalaya.

At about 3.00 P. M. on 2-2-1995, Shri Nawan Marak and his nephew Teging Marak were going towards the village reserve to collect bamboo when all of a sudden a leopard attacked Shri Marak. During the ensuing struggle, Shri Marak managed to pin down the animal to the ground. Taking advantage of this opportunity and not losing his calm, Master Teging immediately struck the beast on its head with his axe, thus killing it instantly. Although Shri Nawan Marak received serious injuries in the scuffle, his life was saved with the timely & courageous action of Master Teging.

2. Master Teging Marak showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of his uncle unmindful of the risk involved to his own life.

G. B. PRADHAN,
Director.

No. 26-Pres/96.—The President is pleased to approve the award of 'Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Smt. Yalla Baby Sarojini,
W/o Shri Satyanarayana,
Ferry Point of Gontheru,
Drain, Yempa Village,
Bhimavaram Mandal,
West Godavari District,
Andhra Pradesh.

On 28-7-95 at about 8.30 A.M., Smt. Yella Baby Sarojini, resident of Yempa Village heard female shouts for help emanating from Ferry Point Gontheru Drain nearby to her house. She at once rushed to the place and 8 women desperately struggling to have themselves after their boat capsized. On seeing this, she jumped into the drain and succeeded in saving the lives of these women.

2. Smt. Yalla Baby Sarojini showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of 8 women from drowning unmindful of the risk involved to her own life.

2. Fr. Savio Menezes De Gama (Posthumous)
At Verna, Salcete, Goa.

On 29-10-1995, three children namely, Master Lionel Gomendes, Master Wynne Rodrigues and Master Floyed residents of Sirlim, went to have bath in a nearby rivulet of Sal River after attending mass prayer at the Sirlim Chapel. Accidentally, they were carried away in deep water by the fast current of the river and started drowning. On seeing this, other children raised an alarm. On hearing their cries, Fr. Savio Menezes De Gama, who was nearby dived into the water in a gallant effort to rescue the children but unfortunately he himself was drowned before he could save the children.

2. Fr. Salvo Menezes De Gama displayed exemplary courage in his attempt to save the lives of three children regardless of his personal safety and in the process made the supreme sacrifice of his life.

3. Shri Sher Singh,
S/o Shri Raja Ram,
Village Bhood Majra,
Tehsil Chhachrauli,
Distt. Yamunanager,
Haryana.

On 4-6-1994 at 6.00 A.M. a hut made of wood and Sarkandas and belonging to Shri Baldev Singh, of village Bhood Majra, accidentally caught fire. The members of the family ran out of the hut but in panic bolted the hut from outside by mistake. Later they realised that their 5-6 year old child was left behind in the hut, which was already in flames. Nobody could gather courage to enter the burning hut to save the hapless child. On seeing this, Shri Sher Singh hailing from the same village showing exemplary courage, made a hole in the mud wall of the hut and by covering himself by a drenched cloth, entered the hut and picked up the unconscious child and pushed the child out to safety through the hole. Shri Sher Singh was later helped by the villagers to come out of the hut after widening the hole.

2. Shri Sher Singh showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child trapped in the fire unmindful of the risk involved to his own life.

4. Shri Gopal Singh,
S/o Shri Swala Nand,
R/o Andhra, P.O. Kanthli
Tehsil Chargaon,
Distt. Shimla,
Himachal Pradesh.

On 12-8-1994 in the evening, Master Sanjeev Kumar S/o Shri Roshan Lal accidentally fell into the Andhra river and started drowning. The width of the river at the site of the incident was 20 feet and the depth of water was 10 feet. At the time of the incident, the water was flowing at the speed of 40 KM per hour. On seeing this, Shri Gopal Singh, a student of 8th Class of the Government High School, Andhra, jumped into the river and successfully rescued Master Sanjeev Kumar to safety.

2. Shri Gopal Singh thus showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a boy unmindful of the risk involved to his own life.

5. Shri Subhash Chander Tegta,
S/o Shri Haradyal Tegta,
R/o Karasa (Meh-and Li),
Tehsil Rohru, Distt. Shimla,
Himachal Pradesh.

On 13-9-1994 at 5.00 P.M., Kumari Reena (14 years) who was returning home from her school accidentally fell into the Pabbar river while crossing it through a hanging bridge. The river was in spate at that time. The other girls and people present nearby started shouting for help. Shri Subhash Tegta, a student of 10+1 who was returning from the school noticed the grim situation and immediately jumped into the river without wasting any time. Meanwhile the girl had been carried away about 400 meters by the fast current of the

river water. Shri Tegta had to struggle but succeeded in rescuing the girl and brought her to safety.

2. Shri Subhash Chander Tegta showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a drowning girl unmindful of the risk involved to his own life.

6. Shri Chetan Kumar Bhandary (*Posthumous*)
S/o Shri Jagadish Bhandary,
Akashatha, Old Marigudi Road,
Suratkal, Odya Village,
Mangalore Taluk,
Dakshina Kannada District,
Karnataka.

On 9-7-1994 at 7.30 A.M., Shri Chetan Kumar Bhandary along with his friend Shri Sunil, went to 'Kalpane' water reservoir near Suratkal of Mangalore Taluk for swimming. The 'Kalpane' with a radius of 70 metres was having 60–70 feet deep water. While swimming Shri Sunil lost control and started drowning. On seeing this, Shri Chetan Kumar Bhandary without caring for his own safety, jumped into the reservoir and succeeded in rescuing Shri Sunil to safety. However, in the process, unfortunately, Shri Bhandary himself got trapped in the deep water and was drowned.

2. Shri Chetan Kumar Bhandary showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of his friend at the risk of his own life

7. Shri Gracious Sanrocky Horta,
Post Kasarkod Taluk,
Honnavar District,
Uttar Kannada,
Karnataka.

On 14-10-1993 at 11.00 A.M., Smt. Devi Kanya Gowda (37 years), Kumari Geeta Ganapayya Gowda (11 years) and Kumari Ganapi Hanumantha Gowda (10 years) residents of Apasarakonda Village, Honnavar Taluk, D. K. District, went to the Arabian Sea shore to collect blue Chippi Stones. Due to strong waves, the sea waters carried them and they started drowning in the 12–15 ft. deep sea about 80–100 metres from the shore. On seeing their plight, Shri Gracious Sanrocky Horta and his colleague Shri Thomas Tomme Horta rushed for their help and rescued them to safety

2. Shri Gracious Sanrocky Horta alongwith Shri Thomas Thomme Horta showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowning in the sea unmindful of the risk involved to his own life.

8. Shri Thomas Tomme Horta,
Post Kasarkod Taluk,
Honnavar District,
Uttar Kannada,
Karnataka.

On 14-10-1992 at 11.00 A.M. Smt. Devi Kanya Godwa (37 years), Kumari Geeta Ganapayya Gowda (11 years) and Kumari Ganapi Hanumantha Gowda (10 years); residents of Apasarakonda Village, Honnavar taluk, D. K. District went to the Arabian Sea shore to collect blue chippi Stones. Due to strong waves, the sea waters carried them and they started drowning in the 12—15 ft. deep sea, about 80—100 metres from the shore. On seeing their plight, Shri Thomas Tomme Horta and his colleague Shri Gracious Sanrocky Horta rushed to help them and rescued them to safety.

2. Shri Thomas Tomme Horta alongwith Shri Gracious Sanrocky Horta showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowning in the sea unmindful of the risk involved to his own life.

9. Kumar Ramanna Udachappa Hosur,
Kadampur, Mundaragi Taluk,
Dharwad District,
Karnataka.

On 17-2-1994 at about 2.00 P. M., Kumar Basavaraj (12 years) student of Govt. Higher Primary School, Kadampur, Mundaragi Taluk, went to the nearby well for drinking water. While washing his tiffin after drinking water from the open well, Kumar Basavaraj accidentally slipped and fell into it. The depth of water in the well was 15 feet at the time of the incident. On seeing this, Kumar Ramanna Udachappa Hosur, a student of VIIth satndard of the same school, jumped into the well without caring for his own safety and rescued the hapless boy.

2. Despite his tender age, Kumar Ramanna Udachappa Hosur showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child from drowning in the well unmindful of the grave risk to his own life.

10. Shri A. George,
S/o Shri Alexander,
Pullivilakam Veedu,
Nadathara,
P. O. Poonthura,
Thiruvananthapuram, Kerala.

On 8-11-1994, a fishing boat 'Devamatha' with 5 persons on board capsized; 200 metres from the shore due to rough sea at Chettuva, Chevakkad Azhimugham. The depth of water at that point was about 15 metres and the sea was extremely turbulent. Two persons died on the spot and remaining persons who were in the process of drowning cried for help. On seeing this Shri A. George, an employee of another fishing boat 'Nazeera' jumped into the sea and with the help of a rope thrown by his co-workers pulled two persons towards his boat and rescued them to safety.

2. Shri A. George showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two persons from drowning in the sea unmindful of the grave risk involved to his own life.

11. Shri Ismail,
S/o Shri Kassim,
Inchakkattu House,
Elemdesam P.O.
Velliyamattam Village,
Thodupuzha Taluk,
Kerala

On 29-7-1994, the main electric line passing over the Cemetary of Elemdesam broke down and fell at the junction of Thodupuzha Velliyamattom road. Master Sunil (15 years) tried to remove the cable on the presumption that it was not live. As soon as he touched the wire he received an electric shock and was trapped. At this juncture, Shri Ismail, one of the passengers of the bus which stopped on seeing the boy struggling for his life, rushed for help. He stripped his dhoti and crossed over the hands of the victim and pulled him out from electric cable without caring for his own life and succeeded in saving the life of the boy from electrocution.

2. Shri Ismail displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of Master Sunil unmindful of the grave risk involved to his own life.

12. Kumari S. Santhakumari,
Pulichayal Vadakkumkara
Veedu, Amboori,
Amboori Village,
Nayvathinkara Taluk,
Kerala

On 12-07-1994, Kumari Santhakumari along with seven other students of the St. Thomas High School, Amboori belonging to Kani Tribe were crossing the Neyyar Dam in an old country boat. Midway, the boat capsized and the occupants of the boat started drowning. People in the surrounding forest gathered on the bank of the Dam but nobody came forward to rescue the drowning children. On seeing this, Kumari Santhakumari with the help of another person swung into action without caring for the risk involved to her life from the crocodiles and could save three children.

2. Despite her tender age, Kumari S. Santhakumari showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 3 children unmindful of the grave risk involved to her own life.

13. Kumari Sunitha,
D/o Radhakrishna Pillai,
Nellikkavil House,
Mangaram Konni P.O.,
Kozhencherry Taluk,
Kerala.

On 18-08-1994, at 9.30 A.M., Smt. Maniyamma, resident of Konni while washing clothes in the Achencoil River, accidentally slipped into the water and was trapped in the whirlpool. Other women on the bank of the river, raised alarm and called labourers from the other side of the river for help. On seeing this, Km. Sunitha who was taking bath on the bank of the river, jumped into the water and succeeded in rescuing Smt. Maniyamma.

2. Km. Sunitha showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a women from drowning unmindful of the grave risk involved to her own life.

14. Km. Teena Joseph,
Kayyalkkal, Kizhakkupuram,
Malayalappuzha,
Pathanamthitta District,
Kerala.

On 06-09-1994, Master Monu Mohan, student of Vth Standard of N.S.S. U.P. School, Malayalappuzha while drawing water from the well near the school, accidentally fell into it. His friends standing near the well raised alarm but nobody could gather courage to rescue the helpless boy. On hearing their cries, Km. Teena Joseph a Vth standard student of the same school came forward to rescue the boy but in her attempt to save the boy she also slipped and fell into the well. But she did not loose her presence of mind, rescued the boy from the well with the help of other students.

2. Despite her own tender age, Km. Teena showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a boy from drowning into a well unmindful of the grave risk involved to her own life.

15. Shri Ramdeen Cherva,
Village Kuppa Vikas,
Khand Odangi,
District Sarguja,
Madhya Pradesh.

On 4-8-94 seven persons including boatman, were crossing the 'Rein' River in a country boat from the Kuppa Ghat. Accidentally the boat was caught in the whirlpool and capsized. Shri Ramdeen Cherva was standing on the other side of the river which was about 100 Metres away from the spot. On seeing this, he jumped into the river and succeeded in rescuing all the seven persons one by one.

2. Shri Ramdeen Cherva showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of seven persons from drowning in the river unmindful of the risk involved to his own life.

16. Shri Rajendra Ukandrao Gohad, *(Posthumous)*
Ramjibaba Nagar,
Morshi,
District Amravati,
Maharashtra.

On the night of 14/15-4-1994 at about 2.30 A.M., some notorious dacoits armed with fire arms and other deadly weapons entered the house of Shri Devidas Bhamkar situated in Ramjibaba Nagar locality of Morshi. The dacoits fired indiscriminately resulting in the death of Shri Bhamkar, his wife and causing severe injuries to other inmates. The dacoits looted property worth Rs. 71 000/- consisting of gold ornaments and cash. Shri Rajendra Ukandrao Gohad, a neighbour who was sleeping outside his house, woke up on hearing the commotion and chased the dacoits who were coming out of the house with the looted property. He tried to apprehend one of the dacoits after hitting him with his stick. The dacoit fired at Shri Gohad to deter him in his attempts to apprehend them. Shri Gohad received the bullet injury which proved fatal and he died on the spot.

2. Shri Rajendra Ukandrao Gohad displayed conspicuous courage in his attempt to apprehend the dacoits. However, in the process, he made the supreme sacrifice of his life.

17. Km. Manbhalang Suchen,
Village Bishop Falls Road,
Lower Mawprem Shillong,
Maharashtra.

On 28-8-1995, Km. Manbhalang Suchen alongwith four other colleagues was washing clothes on the rough and rocky bank of the Umshyrpi River which was in spate due to torrential rain in the catchment area. All of a sudden, flash flood occurred and the water level of the narrow river increased to 10 feet above normal. The group washing clothes was carried by the strong current. However, Km. Suchen was fortunately pushed aside to the bank. On coming out of the water she noticed that three members of the group including her brother, were being carried away by the fast current. She immediately jumped into the river and caught hold of Smt. Atola Buriphang, a pregnent woman and pulled her to safety. She however could not succeeded in saving her brother and another girl who drowned and their dead bodies were recovered later on.

2. Km. Manbhalang Suchen showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a pregnant woman unmindful of the grave risk involved to her own life.

18. Smt. Lalchhawni,
W/o Pu Zahmingliana,
Durtlang Vengthar,
Mizoram-796025.

On 4-1-1995 at about 11.00 A.M., a fire enoulfed the entire house of Pu Lalbiakliana of Durtlang Vengthar. The daughter of Pu Lalbiakliana who was in the nearby stall saw the fire and shouted for help. On hearing her frantic screams their next door neighbour, Smt. Lalchhawni rushed out to help. Seeing that the main door was already on fire, she entered into the burning house through one of the windows. Amidst the smoke and flames she carried the disabled 83 years old woman Smt. Khawlnemi who was lying in the house and brought her out.

2. Smt. Lalchhawni showed exemplary courage and promptitude in saving the life of a helpless woman from being burnt alive at a considerable risk to her own life.

19. Shri Bikram Sahu,
V & P.O. Tikarapada,
District Angul,
Orissa.

On 25-12-1992, the staff of the Nandoghour branch of the United Commercial Bank accompanied by their family members were on a picnic at Tikarapada. While some of them were busy in preparing the meals, 33 persons including ladies and children went in a country boat to Mahanadi river towards Tikarapada ferry ghat to see the crocodiles. The current of the water at the place was very strong. The boat which was old and overloaded, could not bear the pressure, cracked and sunk in the river at a distance of about 300 metres from the shore. All the occupants of the ill-fated boat, many not knowing how to swim, were struggling in the water to reach the shore. People gathered on the bank witnessed the accident helplessly; none coming forward to help. On seeing this, Shri Bikram Sahu who was also standing there jumped into the river and started rescue operation. By this time others also joined in the rescue operation. In this gallant effort, Shri Sahu with the help of others was able to rescue 22 persons from drowning.

2. Shri Bikram Sahu showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 22 persons from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

20. Shri Subash Chandra Behera
Alias Baja Behera,
Village Dhanamandal,
P.O. Sailo Badbil,
P.S. Govindapur,
District Cuttack,
Orissa.

On 20-08-1992, due to flood in river Devi—Kandal, the western side embankment near village Kherasa was washed away. Terrified by the flood, some villagers, of the nearby 14 villages of Kherasa under P.S. Govindapur flocked to the river embankment with their families and live-stock to take shelter. The flood waters caused further damage to another portion of the embankment about 50 yards away from the first point trapping the villagers within a small stretch of the embankment. The fury of the swirling water gradually damaged that very stretch where they were gathered, endangering the lives of people and cattle assembled there for safety. At this juncture, Shri Subash Chandra Behera alias Baja Behera, a boatman of Dhanmandal without caring for his own safety crossed the damaged portion of the embankment in his small boat and rescued the villagers to safety. The particular stretch of the embankment was subsequently washed away within a few minutes after the evacuation was completed. Following this, Shri Behera responded to a call for help from the top of one building which had been gradually submerged by the flood water, Shri Behra took his boat and had to struggle against the strong currents to reach the building and managed to rescue the inmates just before the building collapsed.

2. Shri Subash Chandra Behera alias Baja Behera exhibited exemplary courage, a rare sense of concern for human life in saving the lives of many villagers from the fury of the floods, unmindful of the grave risk involved to his own life.

21. Shri Chander Prakash Meharwal,
Ward No. 10, Gopalpura,
Railway Colony,
Sawai Madhopur,
Rajasthan.
(Bar to Jeevan Raksha Padak)

On 31-3-1994 Km. Guddi (7 years), Km. Mona (5 years) and Km. Meera (2 years), daughters of Shri Kanhiyalal Berva were playing in their house in the absence of their mother. Km. Mona went in search of toys from the Bukhari situated near the stairs with a lamp in her hands. The wood and old & worn out tyres stored in the Bukhari accidentally caught fire from the flame of the lamp. Frightened by the fire and the heat, Km. Mona returned to the room with the lamp and again started playing with her sisters. Meanwhile the fire in the Bukhari started spreading and neighbours thought that grain are being roasted. When Smt. Chhoti Bai, the mother of the children returned to the house, she was horrified to see the flames on the roof of the house. She knocked at the door which was bolted from inside. Apprehending danger, she shouted for help. On hearing her frantic screams, Shri Chander Prakash Meharwal, a neighbour rushed to the site of the fire through the roof of his house and came down to the room where the children were trapped. He brought out all the children to safety after unbolting the main door. He then picked up water pots to extinguish the fire. By then, neighbourers also joined him in the fire-fighting. The fire had heated the roof ceilings and more heat would have resulted in bringing the ceiling down endangering the lives of the children.

2. Shri Chander Prakash Meharwal showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children trapped in fire unmindful of the risk involved to his own life.

3. Shri Chander Prakash Meharwal was earlier conferred Jeevan Raksha Padak in 1989.

22. Shri Narender Kumar Jain (Posthumous)
Plot No. 126, Shivganj Colony,
District Etah,
Uttar Pradesh.

On 31-3-1994 at about 2.00 P.M., Shri Narender Kumar Jain was waiting at the Mahavirji Railway Station for Kota—Agra Passenger Train for going to Agra. Erroneously, he alongwith his children boarded the 4005 Dn. train plying between Indore and Nizamuddin. The other passengers also followed suit. On learning that the said train was for Nizamuddin, they started leaving the compartment alongwith their luggage. Meanwhile, the train started moving. On learning that a 9 years old girl child of his fellow passengers had been left in the train, Shri Narender Kumar boarded the train, picked up the child and jumped from the running train, but unfortunately fell on the track and was run over by the train and thus lost his life.

2. Shri Narender Kumar Jain displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life a child, who otherwise in panic would have jumped from the running train but in the process made the supreme sacrifice of his life.

23. Shri Parbat Singh Solanki,
S/o Shri Poonam Singh,
Village Chamrhiya,
Teh. Sojhat,
Distt. Pali,
Rajasthan.

On 01-11-1994 at 7.30 A.M. a woman with 4-5 month old toddler in her lap, jumped into Lokhatia tank (Bawrhi). The Bawrhi which was 39 feet deep was having water level at 27 feet. On hearing calls for help, Shri Parbat Singh who was taking bath in Lokhatia tank rushed to the spot and jumped into the water without caring for his own safety. Shri Parbat Singh who was himself not adept in swimming, succeeded in saving the life of the child but could not save the life of the woman.

2. Shri Parbat Singh showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

24. Shri Udai Ram,
S/o Shri Motaram,
Chowkidar, Jetpur,
Pali Distt.,
Rajasthan.

On 27-07-1995 at about 9.00 p.m. an information was received in the Flood Control Room that a Tanker proceeding from Garhwarh to Jetpur, fell in to Bandi River while crossing the Bridge. The tanker was carried about 300—350 Metres away by the fast current of the river and three persons on board climbed on the tanker for shelter. A rescue team headed by Distt. Collector rushed to the site and started rescue operations. The swimmer made sustained efforts to rescue the trapped persons with the help of ropes but could not succeed due to the fast current of the water and the dark night. The rescue operation was postponed to the following morning. Block Development Officer/Naib Tehsildar of Rohat and few villagers stayed back to spend the night in temporary light encouraging and engaging the trapped persons in conversation. On the following day at about 6 a.m they floated air filled tubes tied rope towadrs the tanker but nobody amongst the persons present on the site could gather courage to enter into water due to fast flow of the river. On seeing this, Shri Udai Ram, who had come to the site to witness the incident jumped into the river unmindful of the risk involved to his own life, swam to the tanker and succeeded in rescuing the trapped persons to safety.

2. Shri Udai Ram displayed exemplary courage and promptitude in saving the lives of three persons unmindful of the risk involved to his own life.

25. Shri Bhaskara Nand Pandey,
New-16, Punjabi Pura,
Banta Singh Bali Gali,
Behind Telephone Exchange,
Delhi Road, Meerut,
Uttar Pradesh.

On 10-6-1993, Shri Bhaskara Nand Pandey, a student of Dr. Hari Ram Arya Inter College went to Haridwar for a holy dip alongwith his friend Keshav Podel. While they were taking bath in the Ganga river near Saptrishi, Shri Shailender Saxena and Shri Devi Prasad Saxena alongwith two female members of their family, belonging to Janpad Rampur were also taking a holy dip. Accidentally, all the four family members of the Saxena family were carried away by the fast current of the Ganges. A large crowd gathered around the site but no one was prepared to venture into the river to rescue them. At this juncture, Shri Bhaskar Nand Pandey alongwith his friend Shri Keshav Podel jumped into the river braved the current of the fast flowing river and brought all the marooned persons to safety.

2. Shri Bhaskar Nand Pandey showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of four persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

26. Shri Keshav Podel,
S/o Shri Inder Prasad Podel,
Village Bardikrai,
Aajar Guddi, P.O. Rang Chakwa,
District Sonitpur,
Assam.

On 10-6-1993, Shri Keshav Podel, a student of Gita Kutir Sanskrit Vidyalava went to Haridwar for a holy dip alongwith his friend Shri Bhaskar Nand Pandey. While they were taking bath in the Ganges near Saptrishi, Shri Shailendra Saxena and Shri Devi Prasad Saxena alongwith two female members of their family, belonging to Janpad Rampur were also taking a holy dip. Accidentally, all the four family members of the Saxena family were carried away by the fast current of the Ganges. A large crowd gathered around the site but no one was prepared to venture into the river to rescue them. At his juncture, Shri Keshav Podel, alongwith his friend Shri Bhaskar Nand Pandey jumped into the river, braved the current of the fast flowing river and brought all the marooned persons to safety.

2. Shri Keshav Podel showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of four persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

27. Master Jhantu Mondal,
S/o Shri Balai Mondal,
Village Taranagar,
P.O. Baraatagi, P.S. Kaliganj,
G.P. Matiari, District Nadia,
West Bengal.

On 2-8-1994 at about 12.00 Noon, Master Jhantu Karamakar and his sister Amita Karmakar went to the river Bhagirathi without informing their parents. Master Jhantu Karmakar fell into the river accidentally. On seeing this, Km. Amita Karmakar jumped into the river to save her brother. Both not knowing how to swim drowned soon. On seeing this, Master Jhantu Mondal who was on a boat ride, jumped into the river, caught hold of Amita's arm and brought her out to safety.

2. Despite his tender age, Master Jhantu Mondal displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a girl from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

28. Shri Dasharath Sarkar,
S/o Shri Rajyeswar Sarkar,
Vill. Haripur,
P.O. Haripur Chhitka,
Dist. Nadia (Block Tehatta I)
West Bengal.

On 8-6-1994 at about 4.00 P.M. poisonous Carbon-mono-Oxide gas emited from the newly dug mud well at Haripur Village in Nadia District, West Bengal. A boy named Sanjib Swarnakar who ventured into the well became suffocated and fell unconscious after inhaling the poisonous gas. A large crowd assembled around the well but nobody dared to get into the well to rescue the boy from impending death. At this juncture, Shri Dasharath Sarkar (29) got into the well with the help of a rope. He could barely tie Shri Sanjib Swarnakar with the rope when he himself fell unconscious due to inhalation of the poisonous gas. The villagers who were standing on the side of the well and holding the other end of rope however pulled them out to safety. On administering medical treatment, both Shri Sarkar and the boy regained consciousness.

2. Shri Dasharath Sarkar showed conspicous courage and promptitude in saving the life of a boy from the certain death unmindful of the risk involved to his own life.

29. Shri Deepak Lall (Posthumous)
S/o Shri Bhoop Lall,
South Point, Majar Pahad,
Port Blair, A&N.

On 06-02-1995 morning, the students and teachers of the Government Middle School Dollyganj, Port Blair, as a last part of the Saraswati Pooja Celebration carried the idol of goddess "Saraswati" in a truck to the sea shore at Majar Pahad for immersion. On reaching the sea shore, young enthusiastic students carried the idol on their shoulders to the sea amidst chanting of holy slogans. The sea was choppy and a huge wave rose unexpectedly and carried them away to the deep sea. As a result, four students started drowning while the others escaped luckily into shallow waters. The members of the group witnessing the incident from the sea shore, raised alarm. On hearing their call for help, Shri Deepak Lall, a petty stationery shopkeeper, who was busy in arranging things in his shop, situated across the road in front of the sea shore, rushed to the spot, jumped into the choppy sea and rescued three boys one by one. He then surged forward to rescue the fourth boy, namely Simon Kondula, who by then was carried away by the water current. Unfortunately a huge wave hit Shri Deepak Lall also before he could accomplish his task and was taken away by the under water current and drowned. The dead bodies of Shri Deepak Lall and Shri Simon Kondula were later recovered by the Naval divers and speed crafts of the State Sports Authority.

2. Shri Deepak Lall showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowning and while saving the fourth person he made the supreme sacrifice of his life.

30. 13749291 Rifleman Baldev Singh Atri,
Vill. & P.O. Kot,
Teh. Sarkaghat,
Distt. Mandi,
Himachal Pradesh.

On 25-8-1994 at 8.50 p.m. Shri Baldev Singh Atri, a Rifleman in the Mechanical Transport Platoon of 19th Battalion of Jammu and Kashmir Rifles based at Doda came out of his tent and saw the building belonging to Animal Husbandry Department located within the unit camp area on fire. He immediately rushed towards the building to rescue the trapped inmates and maximum possible household goods. Undeterred by smoke, heat and poor visibility, he rushed to the farthest room, broke open the door and found two children and a lady lying in an unconscious state amdist fire. He immediately lifted the lady and brought her to safety. He sustained severe burn injuries on his arms in the process. Without caring for severe pain he made another gallant attempt to rescue the two children. Meanwhile the intensity of the fire had increased manifold making rescue work more difficult. However, he accomplished the noble task and in the process he suffered more burn injuries on his back, chest and hands. The fire was subsquently, brought under control by the fire tenders.

2 Rifleman Baldev Singh Atri exhibited exceptional dedication, determination and courage in saving the lives of three persons trapped in the fire from burning to death.

31. Second Lieutenant
Rajesh Singh Adhikari,
(IC-52574)
Vill. Hari Nagar,
P.O. & Teh. Yallital.
Distt. Nainital,
Uttar Pradesh.

On 18-8-1994 at about 6.00 p.m. Second Lieutenant Rajesh Singh Adhikari was travelling in a boat 'Assault Universal' fitted with OBM carrying 13 persons including six children on a joy-ride in Indira Gandhi Canal. While the boat was 5 KM east of Birdhwal Bridge in mid stream, it capsized endangering the lives of persons on boat. Second Lieutenant Rajesh Singh Adhikari was the first one to come above the water surface. He immediately began rescue work. Quickly, he helped one adult and two children to climb atop the toppled boat. Thereafter, on seeing another lady desperately shouting for help, he ventured to help her till she was finally rescued by another person. Meanwhile he saw the disappearing hand of a lady about 75 yards down stream. He swam to the place and made gallant efforts to save her but could not succeed in his efforts and in the process, got fully exhausted. On coming out of water, he saw the toppled boat sinking under the weight of three persons rescued by him. He again sprang into action and brought one child to the shore. Then on seeing the second child missing from top of the toppled boat, he dived under the toppled boat to fish out the child who was found stuck under the boat and he brought her to safety with the assistance of others. Thus, second Lieutenant Rajesh Singh Adhikari saved four lives and attempted to save two more persons from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

2. Second Lieutenant Rajesh Singh Adhikari exihibited exceptional dedication, determination and courage in saving the lives of 4 persons with utter disregard to his own safety.

32. 1478115 Sapper Jagmohan Lal,
Maghapura Village,
Karasan P.O.,
Naraingarh Tehsil,
Ambala Distt.,
Haryana.

On 17-9-1993, Sapper Jagmohan Lal (No. 1478115) posted to Field Engineering Section, Indian Military Academy, Dehradun while returning to IMA from Ex-Parvat Raksha, noticed a large crowd gathered near the fast flowing stream at Sahastradhara. The crowd was witnessing a lady tourist of about 28 years being carried away by the fast current of the sream. On seeing this, Sapper Jagmohan Lal rushed to the spot, jumped into the flooded stream and successfully rescued the lady from drowning. In this process, Sapper Jagmohan Lal sustained injuries as he was carried away to about 200 Mts. by the fast current of the stream.

2. Sapper Jagmohan Lal showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a lady from drowning in the fast flooding stream unmindful of the risk involved to his own life.

33. 2582230 Naik Sathyan
3-Madras C/o 56 APO

On 20-7-1992 morning Naik Sathyan of 3rd Battalion, Madras Regiment was travelling in a Punjab Roadways Bus from Ambala for a temporary duty at Chandimandair. After 30 minutes journey and near village Lalru on Ambala Chandigarh Highway, the driver lost control and the bus with 50 passengers hit the railing of a culvert, overturned and caught fire from the front. Naik Sathyan, who was at the rear, not losing his calm and presence of mind, made his way out of the bus by breaking open the window. Once out of the bus, he started breaking the window rods and pulled out more than ten trapped passengers including an army Officer. By then, the fire had spread and engulfed the bus with possibility of the diesel tank exploding at any moment. Unperturbed by this alarming situation, Naik Sathyan, broke the rear wind screen and pulled out 3 ladies and a child, who were burnt in the fire. In the process, he himself sustained minor burn injuries on his person. At this time the people who had gathered at the site watched the burning bus but nobody came forward to help the trapped passengers. Naik Sathyan, single handedly carried on the rescue work till such time that the bus was completely engulfed by the fire and any further attempts on rescue work became impossible.

2. Naik Sathyan displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of many persons from a burning bus unmindful of the grave risk involved to his own life.

34. GS 139665-F Safaiwala Ami Chand,
Vill. & P. O. Sekhpura Turk,
Distt. Bijnore,
Uttar Pradesh.

On 7-12-94 at 11.00 P.M., one building near 82-R.C.C. complex at Jessani (Mainpuri) caught fire. On hearing the fire alarm, G. S. 139665-F Safaiwala Ami Chand rushed to the site. Meanwhile the fire had engulfed the entire wooden structure of the building and began to spread towards adjacent building. People from the area gathered around the burning house but nobody could muster courage to take initiative to extinguish the fire. On seeing this, Shri Ami Chand ran back to R.C.C. Complex and brought three fire extinguishers and engaged himself in extinguishing it. His herculean efforts made others to join him in controlling the fire. On being told that two children were trapped in the building he entered into the burning house and rescued them to safety without caring for his own safety. After accomplishing this humane task, he engaged himself in extinguishing the fire and in the process, he was fully exhausted and became unconcious and was rushed to the hospital for medical aid.

2.GS-139665-F Safaiwala Ami Chand displayed tremendous initiative, exceptional leadership qualities, courage and promptitude in saving the lives of two children unmindful of the grave risk involved to his own life.

35. GS-159743-P Overseer Ashok Kumar Sinha,
Village & P. O. Purhara,
Tehsil Haspura,
Distt. Aurangabad,
Bihar.

GS-159743-P Overseer Ashok Kumar Sniha of 355 Road Maintenance Platoon of Project Himank was deployed as works-in-charge of formation cutting at Khalsi for re-alignment on Zonzila-Kargil-Leh road, south of Leh. On 22-2-95 at 11.30 A.M. while drilling for filling explosives was being carried out, a portion of a huge rock caved in and fell on CPL Hira Bahadur and hit CPL Mate Nand Lal Rai and CPL Sunil Murmu who started sliding down the slope of hill. On seeing this, Overseer Ashok Kumar Sinha, exhibiting conspicuous courage and presence of mind got hold of them by spreading himself and prevented them from falling down a sheer vertical drop of 100 Metres. CPL Hira Bahadur succumbed to the injuries and both CPL Sunil Murmu and CPL Mate Nand Lal Rai were rushed to PGI Chandigarh by air for treatment.

2. Overseer Ashok Kumar Sinha exhibited extraordinary courage and promptitude in saving the lives of two persons without caring for the grave danger to his own life.

36. Master Ajit Kumar Parija,
S/o Late Shri Alekha Chandra Parija,
At Pinpur, P. O. Babujang,
Distt-Cuttack,
Orissa-754 134.

On 17-3-1994, at about 11.00 A.M., while passing by the Mahanadi River, Master A. K. Parija, a NCC Cadet, heard cries for help. On seeing a boy being carried away by the fast current of the river which was in spate, he jumped into the river, swam to the boy after crossing a considerable distance & carried the boy to safety. The boy was unconscious, and was given first-aid by Master Parija and others gathered on the bank of the river. Subsequently, the boy was rushed to local bospital for medical aid.

2. Despite his tender age, Master A. K. Parija showed exemplary initiative and presence of mind in saving the life

of a boy from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

37. Master Avinash Pandey,
S/o Sh. Ram Gopal Pandey,
P. O. Janjgir,
District Bilaspur,
Madhya Pradesh-495668.

On 27-3-1994, four teenagers went to a canal near Pondigaon for taking bath after Holi. Accidentally one of them fell into the deep water and started drowning. On seeing his plight, the other three tried to save him but they were also carried away by the fast current of the water. They started shouting in panic. On hearing their cries, Master Avinash Pandey, who had just finished his bath, jumped into the canal and succeeded in rescuing two of them. The other two who had been carried far away by the current of the water, could not be saved.

2. Despite his tender age, Master Avinash Pandey showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two children unmindful of the grave risk to his own life.

38. Master Deepak Rai,
S/o Shri Ram Prasad,
C/o Rajiv Gandhi Vidyalaya,
Bihari Building,
Pusta near Dheka Battery Bus Stand,
East Delhi.

On 14-9-1994 at about 12.00 noon, the students of Rajiv Gandhi Vidyalaya were sitting under the 40 feet long and 18 feet wide thatched roof. Due to incessant rain, water started collection on the roof. As a result of this, the roof caved in and the supporting bamboo sticks and poles started loosening. Terrified, the teachers and other students stood rooted to the spot. Realising the impending danger to the lives of 150 students and teachers, Master Deepak Rai made a Valiant attempt to climb on the roof and throw the water out. The Bamboos, however, could not withstand his weight and some supporting sticks of the roof broke down. Undeterred, Master Deepak Rai tore the Tarpaulin at the place where water had collected wtih the help of a knife. The water then flowed downwards. But for the swift action of Master Deepak Rai, the roof would have collapsed endangering the lives of 150 persons.

2. Master Deepak Rai showed exemplary courage, presence of mind and promptitude in saving the lives of students/teachers of his school unmindful of the grave risk involved to his own life.

39. Kumari Gitanjali Sukhija,
D/O Shri Ajit Kumar Sukhija,
C/O Panjam Inn,
E/212, 31st January Road,
Mala, Fontainhas,
Panaji—Goa-403 001.

On 26-5-1994 at about 6.00 p.m. Kumari Gitanjali Sukhija (12 years), Shri Ryan Se Queira (18 years) and their friends were having snacks at Miramar Beach, Goa, when they heard commotion at the sea shore. Kumari Sukhija and Shri Queira rushed to the place. On learning that a young girl had been carried away by the waves, they jumped into the sea. Due to rough weather, it was difficult to locate the girl and after sustained efforts, they succeeded in spotting the girl. Kumari Gitanjali with the help of Shri Ryan pulled her to safety. The girl was rushed to Hospital but she died on the way to the hospital.

2. Km. Gitanjali Sukhija displayed conspicuous courage and promptitude in trying to save the life of a girl.

40. Master Karthikeyan Kathamuthu,
S/o Shri Patchiappan,
Palla Street, Kuchipalam Colony,
Pallianellianur P.O.,
Pondicherry-605107.

On 15-11-1994, four girls in the age group of 10—12 years were bathing in the Pamba river. As the river was looded, they were carried away by the fast current of the water. On seeing this, Master Karthikeyan, who was standing nearby jumped into the river and succeeded in rescuing three of them. However, he could not locate the fourth girl and raised alarm for help. On hearing his calls, the villagers gathered on the site but could recover the dead body of the fourth girl.

2. Despite his tender age, Master Karthikeyan Kathamuthu showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

41. Master Karunakara Murthy K.C.,
S/o Shri Chandraiah K.S.,
Xth Standard, A-Section,
Pushpa P.U. College,
Periyapatna,
Distt. Mysore,
Karnataka-571107.

On 28-4-1995 at about 4.50 P.M., Smt. Gowramma alongwith her daughter Kumari Jayamma (25 years) went to the nearby well to fetch water. The well which is about 100 metres away from the village, is used for agricultural purposes and is without any boundary wall. The well is 60 feet in depth and one has to step down about 15 feet to dip the pot to draw water. While drawing water, Kumari Jayamma accidentally slipped into the well and started drowning. On seeing her daughter drowning, Smt. Gowramma jumped into the well. The other women around the well shouted for help. On hearing their cries Master Karunakara Murthy KC who was busy in his garden near the well, rushed to the place, jumped into the well and pulled them out.

2. Despite his tender age, Master Karunakara Murthy showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of two women from drowning unmindful of the grave risk to his own life.

42. Kumari Lalita Gonda,
D/o Shri Nathuram Gonda,
Village Khopli,
Bagh Bahare,
Distt. Raipur-493 449,
Madhya Pradesh.

On 29-8-1994, the hut of the neighbour of Shri Nathuram collapsed as a result of heavy downpour. As the wall of the hut was about to fall. Kumari Lalta (9 years), daughter of Shri Nathuram, picked up her 6 month old sister Lata and lay down over her covering the child completely. Meanwhile the wall collapsed and fell down on Kumari Lalita. Subsequently, neighbours pulled out the children buried under the debris. Kumari Lalita sustained serious injuries and had to undergo treatment in the hospital.

2. Despite her tender age, Kumari Lalita Gonda showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of her sister from being buried under the debris unmindful of the risk involved to her own life.

43. Kumari Ruchi Paliwal,
D/o Shri Sanjay Kumar,
11/20-Bagh Mujaffer Khan,
Agra,
Uttar Pradesh.

On 30-6-1995 at 2.00 P.M., Master Rohit (6 years) while playing near the Ganges, slipped accidentally, fell into the water and started drowning. On seeing this, Kumari Ruchi, standing nearby, jumped into the over-flowing river and managed to get hold of the chuo. The chuo also held

Kumari Ruchi in a manner that Km. Ruchi started drowning. She pushed the child with force to free herself. As a result of this, the child again started drowning. Kumari Ruchi, after a lot of struggle, managed to catch the shirt of the child and tried to push him towards the banks. Meanwhile, people gathered on the bank and helped these children to come out of the water.

2. Despite her tender age, Kumari Ruchi showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child from drowning unmindful of the grave risk involved to her own life.

44. Kumari Urmila Thakur,
D/o Shri Shiv Singh Thakur,
Suraj Niketan School,
Neem Tal Road,
Vidisha-464001,
Madhya Pradesh.

On 25-11-1994, two year old child namely Bittoo was playing on the road unattended. A speeding truck was coming from the opposite direction. On seeing this Kumari Urmila (10 years) realising the gravity of the situation, rushed towards the child picked him up, carried him to safety. Kumari Urmila, thus saved the life of the child.

2. Despite her tender age, Kumari Urmila Thakur showed presence of mind and initiative in saving the life of a child.

45. Master Vineesh. R.,
S/o Shri Raveendran,
Munduchira House,
Naduvilamuri,
Thalavady P.O.,
Kerala-689572.

On 12-9-1994, Master Vineesh alongwith his neighbour Master Sujit, went to a nearby store for making purchases. While Master Vineesh entered the shop, Master Sujit strolled towards the nearby canal. The canal was overflowing due to monsoon flood in Pampa river. Master Sujit accidentally fell into the canal and started crying for help. On hearing his cries, Master Vineesh rushed to the canal and found that Sujit had almost drowned in the canal and only his finger tips were visible above the water surface. Without caring for his own safety, Master Vineesh jumped into the canal, caught hold of Sujit and brought him to safety. Meanwhile passerby's gathered at the spot and helped the children come out of water.

2. Despite his tender age, Master Vineesh showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of his friend from drowning in the canal unmindful of the risk involved to his own life.

46. Master Virender Singh Chulling,
S/o Shri Govind Ram,
Sub Tehsil Hangrang,
P.O. Hango (via) Pooh,
Distt. Kinnaur-172111,
Himachal Pradesh.

On 2-12-1994, at midnight, while the people of chilling village were asleep, Master Virender Singh woke up suddenly and saw that the village was being engulfed by a devastating fire. He pulled his younger brother out of the house and raised alarm. By then the fire had burnt down five houses. On hearing his frantic calls, the villagers woke up and rushed to extinguish the fire.

2. Despite his tender age, Master Virender Singh Chulling showed presence of mind and conspicuous courage in acting swiftly to warn the village, thus saving the life and property of the villagers from fire.

G. B. PRADHAN
Director

MINISTRY OF AGRICULTURE

(DEPTT. OF AGRICULTURE & COOPN.)

New Delhi, the 27th February 1996

RESOLUTION

No. 12-22/94/CA.V.—The Government of India has decided to reconstitute Indian Rice Development Council constituted vide Resolution No. 18-5/95-CA.V, dated 26-5-92, with immediate effect. The constituted Council will be as follows :—

CHAIRMAN

A non-official to be nominated by the Govt. of India.

VICE CHAIRMAN

Agriculture Commissioner, Ministry of Agriculture, Deptt. of Agri. & Cooperation, New Delhi.

MEMBERS

A. Members of Parliament.

Three Members of Parliament (two from Lok Sabha and one from Rajya Sabha) to be nominated by the Ministry of Parliamentary Affairs.

B. Representatives of State Govts.

One representative from each of the following State Govts. in their Departments of Agriculture to be nominated by the respective State Govts. :

1. Andhra Pradesh.
2. Assam.
3. Bihar.
4. Haryana.
5. Jammu & Kashmir.
6. Karnataka.

7. Kerala.

8. Madhya Pradesh.

9. Maharashtra.

10. Orissa.

11. Punjab.

12. Uttar Pradesh.

13. Tamil Nadu.

14. West Bengal.

C. Representatives of Central Government.

1. Director General, Indian Council of Agricultural Research, New Delhi or his nominee.

2. JS (Extn.), Ministry of Agriculture, Deptt. of Agri. and Cooperation.

3. Economic and Statistical Adviser, Dte. of Economics & Statistics, New Delhi.

4. Agricultural Marketing Adviser, M/o Rural Areas and Employment.

5. Director, Central Rice Research Institute, Cuttack.

6. Director, Directorate of Rice Research, Hyderabad.

7. Joint Commissioner (FCI), Ministry of Agriculture, Deptt. of Agriculture and Cooperation, New Delhi.

8. One representative of Planning Commission.

9. One representative of the Ministry of Food, New Delhi.

10. One representative of the Ministry of Civil Supplies, Consumer Affairs & Public Distribution, New Delhi.

D. Representatives of Growers :

Fourteen representatives of the Growers to be nominated by the respective State Govts. from the following rice growing States :

	No. of representatives
1. Andhra Pradesh	
2. Assam	1
3. Bihar	1
4. Haryana	1
5. Jammu & Kashmir	1
6. Karnataka	1
7. Kerala	1
8. Madhya Pradesh	1
9. Maharashtra	1
10. Orissa	1
11. Punjab	1
12. Uttar Pradesh	1
13. Tamil Nadu	1
14. West Bengal	1

E. Representatives of Workers :

1. Worker engaged in Farms—One.

2. Worker engaged in Factories—One.

F. One representative from Rice Miller's Association.

G. Such additional persons as may, from time to time, be nominated by the Govt. of India.

OBSERVERS

(who would not be members of the Council but would be invited to assist the Council in its deliberations).

1. Chairman, Commission for Agricultural Costs and Prices, New Delhi or his nominee.

2. Financial Adviser, Ministry of Agriculture, Deptt. of Agriculture and Cooperation, New Delhi.

3. Chairman, National Seeds Corporation Ltd., New Delhi or his nominee.

MEMBER-SECRETARY

Director, Dte. of Rice Development, Patna will function as the Member Secretary of the Council.

2. The council will be an advisory body and will have the following functions :

1. To consider development programmes in the Central and State Sectors in respect of rice, review progress thereof time to time and recommend measures for increasing the production of rice;

2. To consider problems relating to the production and marketing of rice and remunerative prices to rice growers and advise Government in these matters;

3. To consider demands for rice in the domestic as well as export markets and advise Govt. about necessary adjustments in rice production and suggest suitable measures for meeting the same;

4. To facilitate coordination between research and development programmes relating to rice and to advise about the needs for improvement in the quality and productivity of rice;

5. To consider the special needs of small and marginal farmers in respect of rice production and suggest suitable measures for meeting the same;

6. To advise Government on such other connected matters as may be considered necessary from time to time.

3. The Council will have the powers to set up Standing Committees, Technical Committees and ad hoc Committees to look into issues of special importance and co-opt members where necessary, such as representatives of Agricultural Universities and other special interests for special purpose.

4. The Council will meet periodically in important centres of research, trade and industry in rice growing areas and will make its recommendations to the Govt. of India.

5. The Council will continue to function until it is abolished or reconstituted by a Resolution of the Govt. of India. The term of the Chairman and other non-official Members of the Council would be three years from the date they are nominated on the Council unless this period is curtailed or extended by a specific order of the Govt. of India.

6. Those Members of the Council who are nominated from among the Members of Parliament will cease to be members of the Council as soon as they cease to be Members of Parliament.

7. Members of Parliament serving on Government bodies like Committees, Councils, etc. are entitled to get TA/DA for attending the meetings of those bodies in accordance with the provisions of the Salary, Allowances & Pension of Members of Parliament Act, 1954 as amended from time to time and the rules made thereunder.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments, Administrations of Union Territories, Ministries of the Govt. of India, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Office, Lok Sabha Secretariat and Rajya Sabha Secretariat.

2. ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

VEENA UPADHYAYA
Joint Secretary

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(DEPARTMENT OF EDUCATION)

New Delhi, the 19th March 1996

No. F. 18-7/91-TD.V/TS.IV.—On the recommendations of the Board of Assessment for Educational Qualifications, the Govt. of India have decided to recognise the qualification Armament Artificer (Computer) awarded by the Military College of Electronics & Mechanical Engineering, Secunderabad as equivalent to Diploma in Computer Engineering for the purpose of employment to posts and services under the Central Government in the appropriate field. The above recognition will be effective from the year 1988.

VIJAY BHARAT
Director (T)

MINISTRY OF RAILWAYS

(RAILWAY BOARD)

New Delhi, the 30th January 1996

RESOLUTION

No. ERB-I/95/23/25.—Reference Ministry of Railways (Railway Board)'s Resolution of even number dated 11-07-95 regarding setting-up of the Committee of MPs to look into the complaints on functioning of Konkan Railway Corporation.

2. Ministry of Railways (Railway Board) have decided that the tenure of the Committee should be extended for a period upto 15-02-96.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

I. S. GOEL
Dy. Secy. (E),
Railway Board

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1996
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1996.